



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 262]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 18, 2008/आषाढ़ 27, 1930

No. 262]

NEW DELHI, FRIDAY, JULY 18, 2008/ASADHA 27, 1930

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 18 जुलाई, 2008

अंतिम जांच परिणाम

विषय : चीन जन.गण., यूरोपीय संघ, इंडोनेशिया, कोरिया आरओके और तुर्की के मूल के या वहां से निर्यातित हाइड्रोजन पेरोक्साइड के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच ।

सं. 14/17/2006-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए;

2. यतः मै. नेशनल पेरोक्साइड लि., मुम्बई, मै. गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि., वडोदरा, मै. एशियन पेरोक्साइड लि., चेन्नई और मै. हिंदुस्तान आर्गेनिक केमिकल्स लि., मुंबई (जिन्हें आगे आवेदक कहा गया है) ने चीन जन.गण., यूरोपीय संघ, इंडोनेशिया, कोरिया आरओके और तुर्की (जिन्हें आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित हाइड्रोजन पेरोक्साइड (जिसे आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं वसूली तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे आगे प्राधिकारी कहा गया है) के समक्ष एक आवेदन दायर किया और संबद्ध वस्तु के संबंध में पाटनरोधी जांच शुरू करने और पाटनरोधी शुल्क लगाने का अनुरोध किया । प्राधिकारी ने निम्नावली के नियम 5(5) के अनुसार पाटन के आरोप की प्राप्ति के बारे में संबद्ध देशों के दूतावासों को अधिसूचित किया ।

3. और यतः घरेलू उद्योग की ओर से आवेदक द्वारा प्रस्तुत पर्याप्त साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने नियमावली के उप-नियम 6(1) के अनुसार संबद्ध देशों के मूल के या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच शुरू करते हुए 20 जुलाई, 2007 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया ताकि आरोपित पाटन की मौजूदगी, मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटनरोधी शुल्क की उस राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि वसूल किया जाएगा तो वह घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।

क. सामान्य

4. प्राधिकारी द्वारा उपर्युक्त जांच की शुरुआत को अधिसूचित करने वाली सार्वजनिक सूचना जारी करने के बाद इस जांच के बारे में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई है: -

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने आवेदक द्वारा उपलब्ध कराए गए पतों के अनुसार भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों, संबद्ध देशों के ज्ञात निर्यातकों, आयातकों और घरेलू उद्योग को 20.7.2007 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां भेजीं और उनसे जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के 40 दिन के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया।
- (ii) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6(3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और संबद्ध देशों के दूतावासों को आवेदन के अगोपनीय रूपांतरण की प्रतियां उपलब्ध कराईं।
- (iii) भारत में संबद्ध देशों के दूतावासों को इस अनुरोध के साथ नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था कि वे निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए अपने देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को सलाह दें।
- (iv) प्राधिकारी ने नियम 6(4) के अनुसार संबद्ध देशों में ज्ञात निर्यातकों को संगत सूचना मांगने के लिए प्रश्नावलियां भेजीं;
- (v) पिछले तीन वर्षों और जांच अवधि के लिए संबद्ध वस्तु के आयातों के व्यौरों की व्यवस्था करने के लिए वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) से अनुरोध किया गया था। डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त आयात संबंधी आंकड़ों पर इस जांच परिणाम में भरोसा किया गया है;
- (vi) प्राधिकारी ने एक सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पार्टियों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराया जिसे नियम 6(7) के अनुसार हितबद्ध पार्टियों के निरीक्षण हेतु खुला रखा;
- (vii) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में संबद्ध देशों के किसी भी निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर दायर नहीं किया। तुर्की की मै. पुसुला ने निर्यातक प्रश्नावली दायर करने के लिए तुर्की के दूतावास के जरिए समय विस्तार की मांग की लेकिन बढ़ाए गए समय के भीतर भी कोई उत्तर दायर नहीं किया गया था। तुर्की के दूतावास ने पाटन एवं घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बारे में अनुरोध किए थे जिन पर इस जांच परिणाम में विचार किया गया है।
- (viii) उपर्युक्त अधिसूचना के उत्तर में किसी भी आयातक ने प्रश्नावली का उत्तर दायर नहीं किया।
- (ix) जिन निर्यातकों/उत्पादकों ने सूचना दायर नहीं की है उन्हें असहयोगी निर्यातक/आयातक माना गया है।
- (x) प्राधिकारी ने हितबद्ध पार्टियों को सुनने के लिए 6.5.2008 को सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की। सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाली पार्टियों से मौखिक रूप से व्यक्त

किए गए विचारों के लिखित अनुरोध प्रस्तुत करने का आग्रह किया गया था। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस जांच परिणाम में हितबद्ध पार्टियों से प्राप्त अनुरोधों पर किया।

- (xi) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की सूचना का आवश्यक सीमा तक सत्यापन किया।
- (xii) आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना के अनुसार सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की इष्टतम लागत और उसे बनाने और बेचने की लागत निकाली गई थी ताकि इस बात का निर्धारण किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (xiii) यह जांच 1 जनवरी, 2006 से 31 दिसंबर, 2006 की अवधि (जांच अवधि) के लिए की गई थी। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में रूझानों की जांच में अप्रैल, 2003-मार्च, 2004, अप्रैल, 2004-मार्च, 2005, अप्रैल, 2005-मार्च, 2006 की अवधि और जांच अवधि शामिल थीं।
- (xiv) उपर्युक्त नियमावली के नियम 16 के अनुसार इस जांच परिणाम के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधार का प्रकटन ज्ञात हितबद्ध पार्टियों के समक्ष किया गया और उन पर प्राप्त टिप्पणियों पर भी इस जांच परिणाम में विधिवत विचार किया गया है;
- (xv) *** यह चिन्ह इस अधिसूचना में आवेदक द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने नियमानुसार उसे गोपनीय ही माना है।

ख. विचाराधीन उत्पाद:

5. विचाराधीन उत्पाद "हाइड्रोजन पेरॉक्साइड" है। हाइड्रोजन पेरॉक्साइड एक अकार्बनिक रसायन है। हाइड्रोजन पेरॉक्साइड में सशक्त आक्सीकरण गुणधर्म होते हैं और इस प्रकार यह एक ऐसा सशक्त ब्लीचिंग एजेंट होता है जिसका उपयोग आक्सीकारक के रूप में एक विसंक्रामक के तौर पर और ताप प्रक्षेपण (खासकर एकल संचालक के रूप में उच्च परीक्षण पेरॉक्साइड (एचटीपी) जैसे उच्च सांद्रणों में) तथा द्विसंचालक प्रणालियों में किया जाता है। हाइड्रोजन पेरॉक्साइड सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 के उपशीर्ष 28470000 के अंतर्गत वर्गीकृत है।

6. यह उत्पाद नीला-पीला तरल पदार्थ होता है जो घुलनशील विलयन में साफ प्रतीत होता है और जो जल की तुलना में अधिक लसलसा होता है। देखने में यह जल जैसा होता है और घुलनशील अशुद्धियों से मुक्त होता है और सभी अनुपातों में इसे जल में मिश्रित किया जा सकता है। इसका उपयोग बल्क भेषज, कृषि रसायन, रंजक पदार्थों, कुछेक विस्फोटकों और अनुषंगी रसायनों में किया जाता है। हाइड्रोजन पेरॉक्साइड का उपयोग निम्नलिखित में किया जाता है -

- गंध नियंत्रण
- क्षय नियंत्रण
- अकार्बनिक तथा कार्बनिक ऑक्सीकरण
- विषाक्तता में कमी/जैव अवक्रमण में सुधार
- अविसंक्रमण/जैव नियंत्रण

- कागज एवं लुग्दी की ब्लीचिंग
- पेरोक्साइड तथा एपोक्साइड का विनिर्माण
- सड़नरोधी तथा जीवाणुरोधी एजेंट के रूप में चिकित्सीय उपयोग

ख.1 समान वस्तु

7. घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित "हाइड्रोजन पेरोक्साइड" विचाराधीन उत्पाद के समनुरूप है और इसलिए इसे इस जांच के प्रयोजनार्थ समान वस्तु माना जा रहा है।

ग. आवेदक का आधार एवं घरेलू उद्योग

8. यह आवेदन मै. नेशनल पेरोक्साइड लि., मुंबई, मै. गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि., बड़ोदरा, मै. एशियन पेरोक्साइड लि., चेन्नई और मै. हिंदुस्तान आर्गेनिक केमिकल्स लि., मुंबई द्वारा दायर किया गया था, जो भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादक हैं। आवेदकों का भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन का 100% हिस्सा बनता है और इसलिए वे नियमावली के नियम 2(ख) के अर्थ के भीतर घरेलू उद्योग हैं।

9. प्राधिकारी नोट करते हैं कि मै. एशियन पेरोक्साइड लिमिटेड ने जांच अवधि के दौरान लगभग *** मी.ट. का आयात किया था जो कंपनी के कुल उत्पादन का 3.53% बनता है। इस संबंध में प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग में एशियन पेरोक्साइड लिमिटेड को शामिल किए जाने की उपयुक्तता अथवा अन्यथा की जांच की है। यह पाया गया है कि आयातों की कम मात्रा, के लिए घरेलू उद्योग से एशियन पेरोक्साइड लिमिटेड को बाहर रखकर जिससे कंपनी के वित्तीय निष्पादन पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ सकता है, घरेलू उद्योग को हुई क्षति में आंशिक सुधार होगा, जिससे जांच का हित साधन नहीं हो सकता है। अतः प्राधिकारी ने इस मामले में घरेलू उद्योग की संरचना में से एशियन पेरोक्साइड लिमिटेड को अलग नहीं रखा है।

घ. पाटन मार्जिन की गणना हेतु कार्य प्रणाली

10. बाजार में इस उत्पाद की बिक्री खुले और डिब्बाबंद रूप में की जाती है। तथापि, आयात मोटे तौर पर डिब्बाबंद रूप में किए जाते हैं और इसलिए डिब्बाबंद रूप में संबद्ध वस्तु के लिए सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है।

सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत

घ.1 चीन जन.गण.

चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य

11. चीन के किसी भी निर्यातक ने पाटन के निर्धारण हेतु न तो जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का कोई उत्तर दिया है और न ही कोई सूचना प्रस्तुत की है एवं गैर-बाजार अर्थव्यवस्था का खंडन भी प्रस्तुत नहीं किया है। चीन जन.गण. के निर्यातकों की ओर से किसी सूचना के अभाव में सामान्य मूल्य का निर्धारण "किसी अन्य उचित आधार पर" की पद्धति को अपनाते हुए नियमावली के अनुबंध-

1 के पैरा 7 के अनुसार किया गया है । इस प्रयोजनार्थ हरीमन कैमसल्ट द्वारा प्रकाशित पत्रिका "ब्लीचिंग केमिकल" में उपलब्ध (सुदूर) सूचना पर भरोसा किया गया है । जांच अवधि के लिए उपलब्ध भारित औसत कीमतों की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी के रूप में की गई है । कारखाना कीमत निकालने के लिए *** अम.डॉ. पीएमटी की दर से भाड़े एवं अन्य व्यय हेतु समायोजन किया गया है । इस कार्य प्रणाली द्वारा सामान्य मूल्य की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी के रूप में की गई है ।

असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

12. कारखाना निर्यात कीमत की गणना करने के लिए चीन से हुए निर्यातों हेतु डीजीसीआईएंड एस द्वारा सूचित आंकड़ों पर भरोसा किया गया है । डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों से प्राप्त सौदेवार ब्यौरों को *** अम.डॉ. पीएमटी. के रूप में लिया गया है । समुद्री भाड़े के लिए *** अम.डॉ. पीएमटी. की दर से, समुद्री बीमा 0.15% *** अम.डॉ. पीएमटी. की दर से, समुद्री बीमा 1% की दर से, पत्तन व्यय 1% की दर से, और बैंक प्रभार 0.25% की दर से, समायोजन किया गया है ताकि कारखाना निर्यात कीमत निकाली जा सके । उपर्युक्त पद्धति को अपनाकर कारखाना निर्यात कीमत की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी. के रूप में की गई है ।

घ.2 यूरोपीय संघ

यूरोपीय संघ के लिए सामान्य मूल्य

13. यूरोपीय संघ के किसी भी निर्यातक ने पाटन के निर्धारण हेतु न तो जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का कोई उत्तर दिया है और न ही कोई सूचना प्रस्तुत की है । ई.यू. के निर्यातकों की ओर से किसी सूचना के अभाव में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है । इस प्रयोजनार्थ हरीमन कैमसल्ट द्वारा प्रकाशित पत्रिका "ब्लीचिंग केमिकल" में उपलब्ध (यूरोप) सूचना पर भरोसा किया गया है । जांच अवधि के लिए उपलब्ध भारित औसत कीमतों की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी के रूप में की गई है । कारखाना कीमत निकालने के लिए *** अम.डॉ. पीएमटी की दर से भाड़े एवं अन्य व्यय हेतु समायोजन किया गया है । इस कार्यप्रणाली द्वारा सामान्य मूल्य की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी के रूप में की गई है ।

असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

14. कारखाना निर्यात कीमत की गणना करने के लिए यूरोपीय संघ से हुए निर्यातों हेतु डीजीसीआईएंड एस द्वारा सूचित आंकड़ों पर भरोसा किया गया है । डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों से प्राप्त सौदेवार ब्यौरों को *** अम.डॉ. पीएमटी. के रूप में लिया गया है । समुद्री भाड़े के लिए *** अम.डॉ. पीएमटी. की दर से, समुद्री बीमा 0.15% *** अम.डॉ. पीएमटी. की दर से, समुद्री बीमा 1% की दर से, पत्तन व्यय 1% की दर से, और बैंक प्रभार 0.25% की दर से, समायोजन किया गया है ताकि कारखाना निर्यात कीमत निकाली जा सके । उपर्युक्त पद्धति को अपनाकर कारखाना निर्यात कीमत की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी. के रूप में की गई है ।

घ.3 तुर्की**तुर्की के लिए सामान्य मूल्य**

15. तुर्की के किसी भी निर्यातक ने पाटन के निर्धारण हेतु न तो जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का कोई उत्तर दिया है और न ही कोई सूचना प्रस्तुत की है। तुर्की के निर्यातकों की ओर से किसी सूचना के अभाव में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है। इस प्रयोजनार्थ हरीमन कैमसल्ट द्वारा प्रकाशित पत्रिका "ब्लीचिंग केमिकल" में उपलब्ध (यूरोप) सूचना पर भरोसा किया गया है। जांच अवधि के लिए उपलब्ध भारत औसत कीमतों की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी के रूप में की गई है। कारखाना कीमत निकालने के लिए *** अम.डॉ. पीएमटी की दर से भाड़े एवं अन्य व्यय हेतु समायोजन किया गया है। इस कार्यप्रणाली द्वारा सामान्य मूल्य की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी के रूप में की गई है।

असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

16. कारखाना निर्यात कीमत की गणना करने के लिए तुर्की से हुए निर्यातों हेतु डीजीसीआईएंड एस द्वारा सूचित आंकड़ों पर भरोसा किया गया है। डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों से प्राप्त सौदेवार ब्यायों को *** अम.डॉ. पीएमटी. के रूप में लिया गया है। समुद्री भाड़े के लिए *** अम.डॉ. पीएमटी. की दर से, समुद्री बीमा 0.15% *** अम.डॉ. पीएमटी. की दर से, समुद्री बीमा 1% की दर से, पत्तन व्यय 1% की दर से, और बैंक प्रभार 0.25% की दर से, समायोजन किया गया है ताकि कारखाना निर्यात कीमत निकाली जा सके। उपर्युक्त पद्धति को अपनाकर कारखाना निर्यात कीमत की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी. के रूप में की गई है।

घ.4 कोरिया आरओके**कोरिया आरओके के लिए सामान्य मूल्य**

17. कोरिया आरओके के किसी भी निर्यातक ने पाटन के निर्धारण हेतु न तो जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का कोई उत्तर दिया है और न ही कोई सूचना प्रस्तुत की है। कोरिया आरओके के निर्यातकों की ओर से किसी सूचना के अभाव में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है। इस प्रयोजनार्थ हरीमन कैमसल्ट द्वारा प्रकाशित पत्रिका "ब्लीचिंग केमिकल" में उपलब्ध (सुदूर पूर्व) सूचना पर भरोसा किया गया है। जांच अवधि के लिए उपलब्ध भारत औसत कीमतों की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी के रूप में की गई है। कारखाना कीमत निकालने के लिए *** अम.डॉ. पीएमटी की दर से भाड़े एवं अन्य व्यय हेतु समायोजन किया गया है। इस कार्यप्रणाली द्वारा सामान्य मूल्य की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी के रूप में की गई है।

असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

18. कारखाना निर्यात कीमत की गणना करने के लिए कोरिया से हुए निर्यातों हेतु डीजीसीआईएंड एस द्वारा सूचित आंकड़ों पर भरोसा किया गया है। डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों से प्राप्त सौदेवार ब्यायों को *** अम.डॉ. पीएमटी. के रूप में लिया गया है। समुद्री भाड़े के लिए *** अम.डॉ.

पीएमटी. की दर से, समुद्री बीमा 0.15% *** अम.डॉ. पीएमटी. की दर से, समुद्री बीमा 1% की दर से, पत्तन व्यय 1% की दर से, और बैंक प्रभार 0.25% की दर से, समायोजन किया गया है ताकि कारखाना निर्यात कीमत निकाली जा सके। उपर्युक्त पद्धति को अपनाकर कारखाना निर्यात कीमत की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी. के रूप में की गई है।

घ.5 इंडोनेशिया

इंडोनेशिया के लिए सामान्य मूल्य

19. इंडोनेशिया के किसी भी निर्यातक ने पाटन के निर्धारण हेतु न तो जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का कोई उत्तर दिया है और न ही कोई सूचना प्रस्तुत की है। इंडोनेशिया के निर्यातकों की ओर से किसी सूचना के अभाव में सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर किया गया है। इस प्रयोजनार्थ हरीमन कैमसल्ट द्वारा प्रकाशित पत्रिका "ब्लीचिंग केमिकल" में उपलब्ध (सुदूर पूर्व) सूचना पर भरोसा किया गया है। जांच अवधि के लिए उपलब्ध भारत औसत कीमतों की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी के रूप में की गई है। कारखाना कीमत निकालने के लिए *** अम.डॉ. पीएमटी की दर से भाड़े एवं अन्य व्यय हेतु समायोजन किया गया है। इस कार्यप्रणाली द्वारा सामान्य मूल्य की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी के रूप में की गई है।

असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

20. कारखाना निर्यात कीमत की गणना करने के लिए इंडोनेशिया से हुए निर्यातों हेतु डीजीसीआईएंड एस द्वारा सूचित आंकड़ों पर भरोसा किया गया है। डीजीसीआईएंड एस के आंकड़ों से प्राप्त सौदेवार ब्यौरों को *** अम.डॉ. पीएमटी. के रूप में लिया गया है। समुद्री भाड़े के लिए *** अम.डॉ. पीएमटी. की दर से, समुद्री बीमा 0.15% *** अम.डॉ. पीएमटी. की दर से, समुद्री बीमा 1% की दर से, पत्तन व्यय 1% की दर से, और बैंक प्रभार 0.25% की दर से, समायोजन किया गया है ताकि कारखाना निर्यात कीमत निकाली जा सके। उपर्युक्त पद्धति को अपनाकर कारखाना निर्यात कीमत की गणना *** अम.डॉ. पीएमटी. के रूप में की गई है।

ड. पाटन मार्जिन

21. उपर्युक्तानुसार निर्धारित सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत के आधार पर संबद्ध देशों में निर्यातकों/उत्पादकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नलिखित तालिका के अनुसार किया गया है :-

निर्यातक/उत्पादक	सामान्य मूल्य(अम.डॉ.)	निर्यात कीमत (अम.डॉ.)	पाटन मार्जिन (अम.डॉ.)	पाटन मार्जिन (%)
चीन जन.गण.	***	***	***	36.74
यूरोपीय संघ	***	***	***	51.54
तुर्की	***	***	***	49.14
कोरिया आरओके	***	***	***	30.13
इंडोनेशिया	***	***	***	26.24

22. इस प्रकार निर्धारित पाटन मार्जिन काफी अधिक और न्यूनतम सीमा से ज्यादा है ।

च. क्षति निर्धारण एवं कारणात्मक संबंध की जांच हेतु कार्य प्रणाली

च.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

- (क) घरेलू उद्योग की कुल बिक्री (खुली एवं डिब्बा बंद) में वर्ष 2005-06 तक पर्याप्त वृद्धि होने के बाद अत्यधिक गिरावट आई । तथापि, समूची क्षति अवधि के दौरान डिब्बा बंद रूप में बिक्री की मात्रा में गिरावट आई है । घरेलू उद्योग की डिब्बाबंद रूप में बिक्री में उस समय लगभग 11% की गिरावट आई जब मांग में लगभग 27% की वृद्धि हुई थी । यह देखा जा सकेगा कि घरेलू उद्योग की बिक्री में आई गिरावट की तुलना में आयात की मात्रा में समग्र रूप में वृद्धि हुई है । आयात की मात्रा, आयात कीमत, बिक्री मात्रा और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से के बीच प्रत्यक्ष संबंध है । आयात मात्रा में वृद्धि पाटित कीमत पर इस सामग्री की उपलब्धता के कारण हुई जिससे घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई ।
- (ख) लाभ: - घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में भारी गिरावट आई है । यद्यपि, घरेलू उद्योग ने अपने बाजार हिस्से को बनाए रखने का प्रयास किया । तथापि, उसका प्रभाव लाभ के रूप में अत्यंत प्रतिकूल रहा था जिसमें भारी गिरावट आई थी । घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में वर्ष 2005-06 तथा जांच अवधि में तेजी से गिरावट आई ।
- (ग) यह उल्लेखनीय है कि लाभ में अत्यधिक गिरावट ब्याज लागत में पर्याप्त कमी के बावजूद आई है । दूसरे शब्दों में यद्यपि, लाभ में ब्याज लागत में कमी के कारण सुधार होना चाहिए था, तथापि इसकी बजाए उसमें गिरावट आई । घरेलू उद्योग के पास रोजगार के स्तर में गिरावट आई ।
- (घ) लाभप्रदता: - घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में गिरावट आई । याचिकाकर्ताओं का अनुरोध है कि पाटन का प्रतिकूल प्रभाव इतना अधिक था जिससे घरेलू उद्योग की लाभप्रदता भी मांग में पर्याप्त वृद्धि के बावजूद प्रभावित हुई है । उत्पाद का कोई भी उत्पादक उत्पादन में वृद्धि करना चाहेगा । तथापि, पाटन का प्रभाव इतना अधिक रहा है जिससे घरेलू उद्योग उत्पादन में कटौती करने के लिए बाध्य हुआ है ।
- (ङ) लगाई गई पूंजी पर आय :- निवेश पर आय की गणना के प्रयोजनार्थ याचिकाकर्ताओं ने नियत परिसंपत्तियों तथा कार्यशील पूंजी एवं ब्याज तथा कर पूर्व लाभ पर विचार किया है । सूचना से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग निवेशों पर मामूली आय प्राप्त करने में समर्थ रहा है । लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट लाभ में गिरावट के प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप आई है ।
- (च) उत्पादन एवं क्षमता उपयोग :- बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखते हुए घरेलू उद्योग ने संबद्ध वस्तु के उत्पादन हेतु अपनी क्षमता में वृद्धि की है । तथापि, पाटित आयातों द्वारा घरेलू उद्योग पर पड़े भारी दबाव के कारण घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादन में कटौती की गई जिससे क्षमता उपयोग में गिरावट आई । समूची जांच अवधि के दौरान डिब्बाबंद सामग्री के उत्पादन में गिरावट आई ।

- (छ) इस तथ्य के बावजूद घरेलू उद्योग के उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में गिरावट आई कि घरेलू उद्योग ने इष्टतम से कम कीमतों की पेशकश की थी ।
- (ज) मालसूची :- घरेलू उद्योग की मालसूची के स्तर में वृद्धि हुई । घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तावित कम कीमत के बावजूद मालसूची में वृद्धि हुई ।
- (झ) वेतन एवं मजदूरी :- घरेलू उद्योग में वेतन एवं मजदूरी में वृद्धि हुई ।
- (ट) नकद लाभ :- घरेलू उद्योग के लाभ में आई गिरावट से वर्ष 2005-06 तथा जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का नकद लाभ प्रतिकूलतः प्रभावित हुआ है । याचिकाकर्ताओं ने विचाराधीन उत्पाद के लिए नकद लाभ निर्धारित किया है ।
- (ठ) मांग एवं बाजार हिस्सा :- यद्यपि, आयातों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई । तथापि, घरेलू उद्योग के हिस्से में गिरावट आई है ।
- (ड) वृद्धि :- अनेक मापदंडों के संबंध में घरेलू उद्योग की वृद्धि में नकारात्मक प्रवृत्ति का पता चलता है ।

23. यह अनुरोध किया गया है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है । यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि घरेलू उद्योग मात्रात्मक प्रभाव एवं कीमत प्रभाव के दुष्प्रक्र में फंस गया है । प्रथमतः विदेशी उत्पादकों की अतिरिक्त क्षमता के परिणामस्वरूप संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के भारतीय बाजार में हुए आयातों की मात्रा में वृद्धि हुई है जिससे घरेलू उद्योग को बिक्री की हानि हुई है और बाजार हिस्सा गंवाना पड़ा है । इससे प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव पड़ा है । बिक्री में आई इस कमी के कारण घरेलू उद्योग घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री करने के लिए अपनी घरेलू बिक्री कीमत को घटाने के लिए बाध्य हुआ है । इसका प्रतिकूल कीमत प्रभाव पड़ा है । निर्यातकों ने बिक्री कीमत में आगे और कमी कर दी । परिणामतः घरेलू उद्योग ने बिक्री कीमत में आगे और कमी की और यह प्रक्रिया जारी रही । इसके कारण घरेलू उद्योग को निर्यातक देशों के विकृतिकारी तथा अनुचित व्यापार व्यवहारों के परिणामस्वरूप प्रतिकूल मात्रात्मक प्रभाव और प्रतिकूल कीमत प्रभाव का सामना करना पड़ा ।

वास्तविक क्षति का खतरा

24. घरेलू उद्योग को पहले से ही हो रही वास्तविक क्षति के अलावा, संबद्ध देशों से हुए आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का खतरा उत्पन्न किया जा रहा है ।

25. आयात की मात्रा में समग्र रूप में पर्याप्त वृद्धि हुई है जैसा कि आयात की मात्रा में हुई वृद्धि से देखा जा सकेगा । आयातों में यह वृद्धि घरेलू उद्योग द्वारा इष्टतम से कम कीमत पर भी अपनी सामग्री की बिक्री करने के सर्वोत्तम प्रयास के बावजूद हुई है । आयातों में यह वृद्धि और अधिक हुई होती यदि घरेलू उद्योग ने कम कीमतों की पेशकश करके इस पर अंकुश लगाने का प्रयास न किया होता ।

26. कीमत में कटौती काफी अधिक हुई है। किसी भी समय और समान कीमतों की पेशकश करने के बावजूद घरेलू उत्पाद तथा आयातित उत्पाद की कीमतों के बीच में सकारात्मक अंतर रहा है। शामिल उत्पाद के स्वरूप को देखते हुए घरेलू उत्पाद एवं आयातित उत्पाद के बीच कीमत संबंधी कोई अंतर उपभोक्ताओं और सतत दबाव में चल रहे घरेलू उद्योग के लिए कीमत में कमी हेतु स्वीकार्य नहीं है। यह नोट किया जा सकता है कि यह एक ऐसा उत्पाद नहीं है जिसके लिए घरेलू उद्योग आयातित कीमत से अत्यधिक उच्च कीमत पर बिक्री को सहन कर सके। घरेलू उद्योग के पास उपलब्ध एकमात्र विकल्प समान कीमतों पर बिक्री करने का है। उत्पाद की प्रकृति ऐसी है कि कीमत में मामूली अंतर भी इस प्रकार के उत्पाद पर भारी पड़ सकता है।

27. संबद्ध देशों में उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमताएं संबंधित घरेलू मांग की तुलना में काफी अधिक हैं। इन उत्पादकों के पास वस्तुतः काफी अधिक क्षमता है जो उनके घरेलू बाजारों में होने वाली खपत से काफी अधिक है। संबद्ध देशों में अतिरिक्त क्षमता के कारण उत्पादक अपनी कीमत कम करने के लिए बाध्य हुए हैं।

28. हालांकि घरेलू उद्योग के पास इस वस्तु की मालसूची में घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री कीमत में अत्यधिक कमी किए जाने के बावजूद वृद्धि प्रदर्शित हो रही है। तथापि, यह माना जाता है कि संबद्ध देशों में उत्पादकों के पास अपेक्षाकृति अधिक मालसूचियां हैं। तथापि, इस संबंध में कोई प्रकाशित सूचना उपलब्ध नहीं है।

29. याचिकाकर्ताओं ने समूचे विश्व में संबद्ध देशों के निर्यातकों का विस्तृत विश्लेषण किया। यह विश्लेषण घरेलू उद्योग पर उसके संभावित प्रभाव के संबंध में काफी चिंताजनक है। संबद्ध देशों के वैश्विक निर्यातों में वृद्धि की प्रवृत्ति प्रदर्शित हो रही है जिससे विदेशी उत्पादकों के पास बेसी अनप्रयुक्त क्षमताओं का स्पष्ट तौर पर पता चलता है।

च.2 तुर्की दूतावास के अनुरोध

30. याचिकाकर्ता के अगोपनीय रूपांतरण और कुछ याचिकाकर्ताओं की सरकारी वेबसाइटों के जरिए प्राप्त वित्तीय विवरणों के विश्लेषण से यह पता चलता है कि भारतीय घरेलू बाजार को हुई क्षति तथा तुर्की के मूल के आयातों के बीच कोई कारणात्मक संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा याचिका के अगोपनीय रूपांतरण में वास्तविक क्षति के बारे में पक्षपातपूर्ण एवं स्वतः विरोधाभासी पर्याप्त सूचना निहित है और वह सभी ज्ञात कारकों का विश्लेषण करने में अक्षम है।

31. यद्यपि, संबद्ध उत्पाद पर सीमाशुल्क में वृद्धि हुई है और याचिकाकर्ता अंतर्राष्ट्रीय बाजार में संबद्ध वस्तु के निर्यातक के रूप में पर्याप्त प्रतिस्पर्धी नहीं रहे हैं, तथापि यह माना जाता है कि याचिकाकर्ताओं का उद्देश्य भारतीय हाइड्रोजन पेरॉक्साइड बाजार की एकाधिकारवादी संरचना को सुरक्षित करने का है। वस्तुतः याचिका के अगोपनीय रूपांतरण से यह महसूस किया जाता है कि शिकायतकर्ता विशेषतः निवेश पर आय, निवेश, लगाई गई पूंजी पर आय, क्षमता उपयोग और मजदूरी के संबंध में उचित स्थिति में हैं। इन सकारात्मक स्थितियों में याचिकाकर्ताओं द्वारा दावा

की जाने वाली कोई क्षति संबद्ध उत्पाद के आयात की बजाए उनकी खुद की समस्याओं से हो सकती है।

32. इसके अलावा, याचिका के अगोपनीय रूपांतरण में इजराइल तथा थाईलैंड पर चीन जन.गण, इंडोनेशिया, दक्षिण कोरिया, ई.यू. एवं तुर्की के बीच विचार किया जा रहा है जिनसे वास्तविक क्षति हो रही है जबकि इनका उल्लेख जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना में नहीं किया गया है। तुर्की की सरकार द्वारा यह स्पष्टीकरण मांगा जा रहा है कि तुर्की के विपरीत इन दोनों देशों को इस जांच में शामिल क्यों नहीं किया गया है। तुर्की की सरकार का यह मत है कि किसी अन्य देश से हुए आयातों के कारण हुई क्षति का कारण तुर्की के मूल के आयातों को नहीं माना जा सकता।

i. घरेलू उद्योग के आर्थिक मापदंड

33. याचिका के अगोपनीय रूपांतरण में यह दावा किया गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री, लाभ, उत्पादन, वृद्धि, बाजार हिस्से, रोजगार, उत्पादकता, निवेश पर आय एवं क्षमता उपयोग में गिरावट आई है और घरेलू उद्योग के इस कार्यवाह्य में वास्तविक क्षति हुई है और उसे वास्तविक क्षति होने का खतरा है। वस्तुतः कुछेक याचिकाकर्ताओं की सरकारी वेबसाइट में निम्नलिखित सूचना से इन दावों का खंडन होता है।

(क) गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि. (जीएसीएल)

- उत्पादन एवं लाभ

34. गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि. (जीएसीएल) की 33वीं वार्षिक रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि "कंपनी द्वारा कास्टिक सोडा और हाइड्रोजन पेराक्साइड के लिए अपनी क्षमताओं में विस्तार किया जा रहा है।" और "वर्ष 2005-06 के दौरान इस वस्तु की औद्योगिक मांग में सुधार एवं उर्ध्वगामी प्रवृत्ति की वजह से कंपनी के उत्पाद की मांग में बढ़ोतरी हुई है। कंपनी वित्त वर्ष 01 में प्रचालन मार्जिन 20.14% से बढ़ाकर वित्त वर्ष 06 में 35.18% करने में समर्थ रही है"। वर्ष 2005-06 की अवधि वह अवधि है जो क्षति जांच में शामिल है।

35. जीएसीएल के कर्मचारियों की संख्या वर्ष 2005 में 1395 से बढ़कर वर्ष 2006 में 1529 हो गई है। इसके अलावा, संबंधित रिपोर्टों में यह उल्लेख किया गया है कि "आपकी कंपनी ने वर्ष 2005-06 के दौरान बेहतर निष्पादन किया है। समीक्षाधीन वर्ष आपकी कंपनी के लिए सर्वाधिक भाग्यशाली वर्ष रहा है। कंपनी समीक्षाधीन वर्ष के दौरान अब तक का सबसे अधिक लाभ प्राप्त कर सकती है।" और "आपकी कंपनी ने अपने इतिहास में अब तक का सबसे अधिक उत्पादन एवं बिक्री कारोबार हासिल किया है।"

36. इसी के समान जीएसीएल से संबंधित प्रेस में जारी खबरों अर्थात् "अगस्त, 2007 में जीएसीएल ने दहेज में 108 करोड़ रूपए की हाइड्रोजन पेरोक्साइड परियोजना शुरू की जिसकी क्षमता 12,540 टन प्रति वर्ष (टीपीए) की है।" और "गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि. ने 31 दिसंबर, 2007 को समाप्त 9 माह के लिए अर्जन परिणामों की सूचना दी है। कंपनी ने यह सूचना दी है कि निवल लाभ पिछले वर्ष की इसी अवधि के लिए 1,480 मिलियन भारतीय रूपए की तुलना में 2,057.3 मिलियन भारतीय रूपए का रहा है जिसमें 39% की वृद्धि हुई है।" से

स्पष्टतः यह पता चलता है कि कंपनी ने अपनी क्षमता और लाभ में वृद्धि की है। इसके प्रतिकूल उसे वास्तविक क्षति हुई है।

37. उपर्युक्त विवरणों को ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि जीएसीएल ने याचिका के अगोपनीय रूपांतरण में किए गए प्रतिकूल दावों पर वर्ष 2005-2007 की अवधि के दौरान पर्याप्त सकारात्मक वित्तीय निष्पादन किया है।

- निविष्टि लागत

38. गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लिमिटेड की 33वीं वार्षिक रिपोर्ट में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि उत्पादन एवं परिवहन में कच्ची सामग्री की लागत बढ़ रही है। जीएसीएल की 34वीं वार्षिक रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि "पूर्ववर्ती वित्तवर्ष 2004-06 के दौरान जैसी विभिन्न कच्ची सामग्रियों की खरीद लागत और अतिरिक्त परिवहन लागत में वृद्धि के कारण कच्ची सामग्री संबंधी व्यय में 24.55% की वृद्धि हुई है। पूर्ववर्ती वित्त वर्ष 2005-2006 के दौरान विद्युत प्रभावों में 32.87% की वृद्धि हुई है। विनिर्माण एवं प्रचालन लागत, कर्मचारी, पारिश्रमिक एवं लाभ, प्रशासनिक, विविध एवं विपणन व्यय सहित अन्य प्रचालनात्मक व्यय में वित्त वर्ष 2006-07 के दौरान 19.86% की वृद्धि हुई है ...।"

39. तुर्की की सरकार का यह मत है कि घरेलू बाजार में लागत में वृद्धि द्वारा भारतीय घरेलू उद्योग को हुई किसी क्षति का कारण तुर्की के मूल के आयातों को नहीं माना जा सकता है।

(ख) हिन्दुस्तान आर्गेनिक केमिकल्स लि.

- कंपनी की वित्तीय अस्थिरता

40. हिन्दुस्तान आर्गेनिक केमिकल्स लि. की 45वीं वार्षिक रिपोर्ट में यह देखा जाता है कि कंपनी को वित्त वर्ष 1997-98 से 2005-06 तक घाटा हो रहा था। तथापि, स्थायी पुनरुद्धार कार्यनीति तैयार करने के लिए कंपनी ने तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता अध्ययन हेतु एसबीआई केपिटल मार्केट्स लिमिटेड को नियुक्त किया था। वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार भारत सरकार से अनुरोध है कि वह ऋणों को चुकता करने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली इक्विटी उपलब्ध कराए और उच्च लागत वाले शेष बंध पत्रों को चुकता करने के लिए प्रयोग में लाई जाने वाली निधियां उपलब्ध कराए और उसने यह भी अनुरोध किया था कि उच्च लागत वाले ऋण को चुकता करने के लिए प्रयोग में लाए जाने हेतु 10 वर्ष की पूर्णकालिक 100 करोड़ रूपए की भारत सरकार की गारंटी जारी रखी जाए। इस स्थिति से कंपनी की अस्थिरता का स्पष्ट पता चलता है।

41. इस बीच रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, रसायन एवं पेट्रोरसायन विभाग की वर्ष 2005 की रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि कंपनी ने घाटा पुरानी प्रौद्योगिकी, औद्योगिक मानदंडों की तुलना में जनशक्ति की संचय लागत, अलाभकारी प्रचालनों एवं विपणन समस्याओं के कारण उठाया है।

42. तुर्की की सरकार का यह विचार है कि याचिकाकर्ताओं की वित्तीय समस्याओं द्वारा भारतीय घरेलू उद्योग को कोई क्षति तुर्की के मूल के आयातों द्वारा नहीं हो सकती है।

- निविष्टि लागत

43. हिन्दुस्तान आर्गेनिक केमिकल्स लि. की 45वीं वार्षिक रिपोर्ट में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि विदेशों में स्थित याचिकाकर्ताओं की तुलना में भारतीय उद्योग की क्षमता काफी कम है ; वस्तुतः भारतीय उद्योग ऊपरी लागत के बारे में अलाभकारी स्थिति में है, तैयार उत्पाद की प्रति टन जनशक्ति लागत अधिक है और पुराने मूल्यहासित संयंत्रों के लिए उच्च रखरखाव लागत की जरूरत है ।

44. इसके अलावा, उसी रिपोर्ट के अनुसार कंपनी को क्षति कच्चे तेल की बढ़ती हुई कीमतों, उच्च श्रम लागत, बाढ़ के कारण बंद हुए संयंत्रों एवं भट्टी की बड़ी मरम्मतों से जुड़ी संवर्धित लागतों के कारण हुई है ।

45. तुर्की की सरकार का यह मत है कि घरेलू उद्योग में बढ़ती हुई लागत द्वारा भारतीय घरेलू उद्योग को कोई क्षति तुर्की के मूल के आयातों के कारण नहीं हो सकती है ।

II. टैरिफ में कमी

46. भारत गणराज्य ने संबद्ध उत्पाद पर सीमाशुल्क वर्ष 2002-03 में 30% से घटाकर वर्ष 2006-07 में 12.5% कर दिया है और इस संरचना में घरेलू उत्पादकों के उत्पादों को आयातों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा है ।

47. गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि. की 33वीं वार्षिक रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि "अल्कली के उत्पादों को सीमाशुल्क में कमी के कारण आयातों से प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा है । ... जैसे उत्पादों के लिए अनुचित प्रतिस्पर्धा से बचाव करने हेतु कंपनी ने ऐसे आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के लिए निर्दिष्ट प्राधिकारी से संपर्क किया था और विभिन्न देशों से इन उत्पादों के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाया गया है ।" इस रिपोर्ट में उल्लिखित यह दृष्टिकोण पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के प्रावधानों के तहत उचित नहीं है जिसमें यह विनियमित किया गया है कि जांच प्राधिकारियों द्वारा "पाटित आयातों से भिन्न ऐसे ज्ञात कारकों" की जांच की जाएगी जिनसे "उसी समय" घरेलू उद्योग को क्षति हो रही है और उन कारकों की जांच की जाएगी जो "विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा" ... सहित इस संबंध में प्रासंगिक हो सकते हैं । इसके अलावा, डब्ल्यूटीओ अपीलिय निकाय ने यूएस-हॉट रोलड स्टील के मामले में यह निष्कर्ष निकाला था कि जांच प्राधिकारियों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पाटित आयातों से भिन्न ज्ञात कारकों द्वारा हुई क्षति का कारण पाटित आयातों को नहीं "माना" जा सकता है ।

48. इन परिस्थितियों में कम टैरिफ दरों के तहत प्रतिस्पर्धा करने के लिए घरेलू उद्योग की अक्षमता के कारण हुई संभावित वास्तविक क्षति का कारण तुर्की के मूल के आयातों को नहीं माना जा सकता है ।

निष्कर्ष:

49. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.5 के विपरीत याचिका के अगोपनीय रूपांतरण में अन्य कारकों (यथा बढ़ती हुई लागत, याचिकाकर्ताओं की वित्तीय समस्याओं, टैरिफ कमी के बाद प्रतिस्पर्धा) द्वारा हुई क्षति का कारण तुर्की के मूल के आयातों को मानने की कोशिश की गई है।

50. इन परिस्थितियों में तुर्की की सरकार इस बात के प्रति आश्वस्त नहीं है कि शिकायत में गैट 1994 के पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 5.3 के प्रावधानों के भीतर तुर्की के मूल के आयातों के खिलाफ पाटनरोधी जांच शुरू करने के बारे में पर्याप्त साक्ष्य निहित है।

51. और तुर्की का विचार यह है कि इसके विपरीत भारतीय सरकार द्वारा सीमाशुल्क में कमी के संबंध में उदारीकृत बाजार अर्थव्यवस्था की दिशा में किए गए प्रयासों के मद्देनजर याचिकाकर्ताओं का उद्देश्य प्रतिस्पर्धा को समाप्त कर भारतीय हाइड्रोजन पेरोक्साइड बाजार की एकाधिकारवादी संरचना को बरकरार रखा जाए।

52. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 12.2 के कार्य ढांचे के भीतर तुर्की की सरकार मंत्रालय से यह अनुरोध करती है कि वह अंतिम जांच परिणाम के बारे में तुर्की की सरकार को इस बात की सूचना दे कि क्या अन्य बातों के साथ-साथ तुर्की के मूल के हाइड्रोजन पेरोक्साइड के आयातों के बारे में पाटनरोधी जांच सकारात्मक है या नकारात्मक।

53. तुर्की और भारत के बीच मैत्रीपूर्ण एवं संरचनात्मक संबंधों को दोनों देशों द्वारा अत्यधिक महत्व दिए जाने की बात को ध्यान में रखते हुए तुर्की की सरकार भारत गणराज्य से यह अनुरोध करती है कि वह तुर्की के मूल के आयातों पर कोई उपाय लागू किए बिना इस प्रक्रिया को तुरंत समाप्त कर दे।

च.3. प्राधिकारी द्वारा जांच

54. घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले इजराइल और थाइलैंड के मुद्दे के बारे में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि आवेदक ने अन्य देशों के अलावा इजराइल और थाइलैंड के विरुद्ध जांच शुरू करने के लिए आवेदन दायर किया था। तथापि, प्राधिकारी ने इजरायल और थाइलैंड के खिलाफ पर्याप्त साक्ष्य नहीं पाया था और इसलिए यह जांच केवल संबंधित देशों के खिलाफ शुरू की गई थी। प्राधिकारी ने क्षति से संबंधित तर्कों की जांच की और यह नोट किया कि उत्पादकों का क्षति संबंधी विश्लेषण वास्तविक सत्यापित आंकड़ों के आधार पर किया गया है। तुर्की के दूतावास ने जीएसीएल तथा एचओसीएल की वार्षिक रिपोर्ट उद्धृत की है और इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि वार्षिक रिपोर्टों में उल्लिखित विवरण समग्र कंपनियों के संदर्भ में है और ये कंपनियां बहु उत्पाद एवं बहु स्थानी कंपनियां हैं, इन कंपनियों का समग्र रूप में निष्पादन समान वस्तु के क्षति विश्लेषण के लिए संगत नहीं है और इसकी जांच समान वस्तु से संबंधित वास्तविक रिकार्डों के आधार पर की गई है।

55. यह भी उल्लेख किया गया है कि जीएसीएल ने 108 करोड़ रूपए के निवेश से 12540 टन प्रतिवर्ष (टीपीए) की क्षमता के साथ दहेज में एक परियोजना स्थापित कर क्षमता में वृद्धि की है। क्षमता में इस वृद्धि पर निम्नलिखित क्षति विश्लेषण के संगत खंड में विचार किया गया है।

56. आगे यह उल्लेख किया गया है कि एचओसीएल की 45वीं वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार कंपनी को वित्त वर्ष 1997-98 से 2005-06 तक घाटा हो रहा है और स्थायी पुनरुद्धार कार्य योजना तैयार करने के लिए कंपनी ने तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता अध्ययन हेतु एसबीआई कैपिटल मार्किट लिमिटेड को नियुक्त किया था। आगे यह बताया गया है कि कंपनी वित्तीय रूप से अस्थिर है। यह भी बताया गया है कि रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय की 2005 की रिपोर्ट में यह उल्लेख किया गया है कि कंपनी को हुआ वित्तीय घाटा पुरानी प्रौद्योगिकी, औद्योगिक मानदंडों की तुलना में जनशक्ति की उच्च लागत, अलाभकारी प्रचालन और विपणन समस्याओं के कारण हुआ था। इस संबंध में प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि एचओसीएल को एक रूग्ण कंपनी के रूप में घोषित किया गया है और प्राधिकारी ने इस तथ्य को विधिवत नोट किया है और उसने इस जांच परिणाम के खंड जी.6 में एचओसीएल को अलग रखकर घरेलू उद्योग का विश्लेषण भी किया है। यह भी नोट किया गया है कि एचओसीएल द्वारा समान उत्पाद का उत्पादन आधार वर्ष में लगभग 12% था जो घरेलू उद्योग के कुल उत्पादन का जांच अवधि में 9% से कम था। अतः घरेलू उद्योग की क्षति की प्रवृत्ति का घरेलू उद्योग में कंपनी के अत्यंत कम महत्व के मद्देनजर पर्याप्त प्रभाव नहीं पड़ा है। आगे यह भी नोट किया गया है कि बिक्री मात्रा, बिक्री लागत, लाभप्रदता के मामले में प्रवृत्ति एक जैसी बनी रही है। यद्यपि, एचओसीएल के आंकड़ों को घरेलू उद्योग से अलग रखा गया है। यद्यपि, घरेलू उद्योग को हुई क्षति का विश्लेषण घरेलू उद्योग से एचओसीएल को अलग रखकर किया गया है, तथापि प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि एचओसीएल को अलग रखने का कोई विधिसम्मत आधार नहीं है। अलग रखने का सीमित प्रयोजन यह है कि घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाने वाले पाटन से भिन्न कारकों के प्रभाव को अलग रखा जा सके।

च.4 क्षति का संचयी निर्धारण

57. अनुबंध-II के पैरा III अनुसार जिन मामलों में एक देश से अधिक से हुए किसी उत्पाद के आयातों की एक साथ पाटनरोधी जांच की जा रही हो वहां प्राधिकारी के लिए केवल उस स्थिति में ऐसे आयातों के प्रभावों का संचयी मूल्यांकन करना अपेक्षित होता है जब वह यह निर्धारित करे कि (क) प्रत्येक देश से हुए आयातों के संबंध में स्थापित पाटन मार्जिन निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त 2% से अधिक है और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा समान वस्तु के आयातों की 3% है और (ख) आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तु के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थिति के मद्देनजर आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है।

58. आयातित उत्पादों तथा समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों का निर्धारण करने की दृष्टि से प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि-

- i) प्राधिकारी ने यह पाया है कि प्रत्येक संबंध देश के संबंध में पाटन मार्जिन 2% से अधिक और प्रत्येक देश से हुए आयातों की मात्रा भी 3% से अधिक है।
- ii) संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का आयात एक ही टैरिफ वर्गीकरण के तहत किया गया है;

iii) प्राधिकारी ने यह पाया है कि आयातित संबद्ध वस्तु घरेलू रूप से उत्पादित हाइड्रोजन पेरॉक्साइड की वाणिज्यिक स्थानापन्न है।

iv) प्राधिकारी ने आगे यह नोट किया है कि इंडोनेशिया के मामले को छोड़कर समस्त संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक वृद्धि होती रही है। यह भी नोट किया गया है कि तुर्की से आयातों की मात्रा में वर्ष 2005-06 और जांच अवधि में तेजी से वृद्धि हुई है जब पूर्ववर्ती वर्ष 2004-05 की तुलना में उसकी कीमतों में गिरावट आई थी। चीन जन.गण. से जांच अवधि में आयातों की मात्रा में तेजी से वृद्धि हुई क्योंकि अन्य सभी संबद्ध देशों की तुलना में कीमतें कम थीं। ईयू से जांच अवधि में मात्रा में वृद्धि हुई क्योंकि तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में उसकी कीमत कम हो गई थी। कोरिया के मामले में मात्रा में वर्ष 2004-05 में वृद्धि हुई क्योंकि उसकी कीमत तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में कम हो गई थी। तथापि, जांच अवधि में मात्रा में गिरावट आई। इंडोनेशिया से वर्ष 2005-06 में कीमत में वृद्धि होने के कारण आयातों की मात्रा में गिरावट आई। यद्यपि जांच अवधि में वृद्धि हुई। संबद्ध देशों से आयात की मात्रा में वृद्धि और गिरावट उनकी कीमत में परिवर्तन के अनुसार घटती-बढ़ती रही और अन्य संबद्ध देशों की कीमतों से संबद्ध देशों के बीच प्रतिस्पर्धा का पता चलता है।

59. 'उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी यह मानते हैं कि आयातित उत्पादों और समान घरेलू उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की स्थितियों को देखते हुए घरेलू रूप से उत्पादित समान वस्तु पर संबद्ध वस्तु के आयातों के प्रभाव का संचयी निर्धारण उचित है।

60. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.1 और पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-2 में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव; तथा (ख) पाटित आयातों के मात्रात्मक प्रभाव के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच का प्रावधान है। प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित हो चुका है कि क्या आयातों में समग्र रूप में या आयातक सदस्य के उत्पादन या उसमें होने वाली खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है। जहां तक पाटित आयातों के कीमत प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारियों के लिए यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।

61. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने क्षति एवं पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो की मौजूदगी की जांच करने के लिए घरेलू उद्योग पर संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के संचयी प्रभाव तथा उत्पादन, क्षमता उपयोग, बिक्री, कीमत एवं लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच की है।

62. चूंकि संबद्ध देशों से हुए निर्यातों के लिए सकारात्मक पाटन मार्जिन की पुष्टि की गई है, इसलिए संबद्ध देशों से हुए समूचे निर्यातों को क्षति विश्लेषण एवं कारणात्मक संबंध की जांच के प्रयोजनार्थ पाटित आयात माना गया है।

(क) मात्रात्मक प्रभाव : पाटित आयातों का मात्रात्मक प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव।

63. क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ डीजीसीआईएफएस से प्राप्त आंकड़ों पर भरोसा किया गया है। यह देखा गया है कि आयात सीदे अल्प मात्रा में किए गए थे, जिससे यह पता चलता है कि आयात मुख्यतः डिब्बाबंद रूप में किए गए थे। यह भी देखा गया है कि आयात मुख्यतः 50% की सांद्रण क्षमता में किए गए थे। अलग-अलग सांद्रण में किए गए अन्य आयातों को गणना के प्रयोजनार्थ 50% सांद्रण में परिवर्तित किया गया है। आंकड़ों से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से हुए आयात वर्ष 2003-04 में 6006 मी.टन से समग्र रूप में बढ़कर जांच अवधि के दौरान 29606 मी.टन हो गए हैं। इसी अवधि के दौरान आयातों में संबद्ध देशों का हिस्सा एक समान स्तर पर बना रहा। यह हिस्सा वर्ष 2003-04 में 96.90% और जांच अवधि में 96.29% था। तथापि, अलग-अलग संबद्ध देश के हिस्से में पर्याप्त परिवर्तन हुआ।

64. उत्पादन के संबंध में आयात वर्ष 2003-04 में 6.11% से बढ़कर जांच अवधि में 32.61% हो गए। इसी अवधि के दौरान खपत के संबंध में आयात 6.33% से बढ़कर 23.97% हो गए।

i) आयात की मात्रा और संबद्ध देश का हिस्सा

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन. 06-दिसं. 06
आयात की मात्रा					
चीन	मी.ट.	546	5,357	4,696	11,422
इंडोनेशिया	मी.ट.	3,019	2,617	1,819	2,093
कोरिया	मी.ट.	1,492	1,182	4,884	2,499
तुर्की	मी.ट.	0	1,010	6,039	11,682
ईयू	मी.ट.	950	702	186	1,910
संबद्ध देश	मी.ट.	6,006	10,867	17,625	29,606
अन्य देश	मी.ट.	192	1,643	1,621	1,141
कुल आयात	मी.ट.	6,198	12,510	19,246	30,747
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	202	310	496
आयातों में बाजार हिस्सा					
चीन	%	8.81	42.82	24.40	37.15
इंडोनेशिया	%	48.71	20.92	9.45	6.81
कोरिया	%	24.07	9.45	25.38	8.13
तुर्की	%	0.00	8.07	31.38	37.99
ईयू	%	15.32	5.61	0.97	6.21
संबद्ध देश	%	96.90	86.87	91.58	96.29
अन्य देश	%	3.10	13.13	8.42	3.71
कुल आयात		100	100	100	100
सीआईएफ आयात कीमत					
चीन	रु./मी.ट.	12,003	16,727	14,579	15,037
इंडोनेशिया	रु./मी.ट.	9,490	12,989	15,387	16,181
कोरिया	रु./मी.ट.	13,473	17,153	16,152	16,462
तुर्की	रु./मी.ट.	0	18,172	16,212	16,370
ईयू	रु./मी.ट.	13,341	19,690	19,418	16,601
संबद्ध देश	रु./मी.ट.	11,316	16,199	15,709	15,865
अन्य देश	रु./मी.ट.	12,920	17,901	16,227	17,079
कुल आयात	रु./मी.ट.	11,367	16,424	15,754	15,911

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
उत्पादन के संबंध में आयात	%	6.11	10.94	17.99	32.61
खपत के संबंध में आयात	%	6.33	10.12	15.27	23.97

ii) मांग, उत्पादन और बाजार हिस्सा

क) मांग में वृद्धि

मांग	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
घरेलू उद्योग	मी.ट.	88,762	94,925	96,138	92,775
आयात-संबद्ध देश	मी.ट.	6,006	10,867	17,625	29,606
आयात-अन्य देश	मी.ट.	192	1,643	1,621	1,141
कुल आयात	मी.ट.	6,198	12,510	19,246	30,747
कुल मांग	मी.ट.	94,960	1,07,435	1,15,384	1,23,522
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	113	122	130

65. संबद्ध वस्तु की मांग का निर्धारण घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री और समस्त देशों से हुए समस्त आयातों को जोड़कर की गई है। आंकड़ों में दर्शायी गई प्रवृत्ति से यह पता चलता है कि संबद्ध वस्तु की मांग में आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि में वृद्धि होती रही है। आधार वर्ष अर्थात् 2003-04 की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 30% की वृद्धि हुई।

ख) घरेलू उद्योग की क्षमता, क्षमता उपयोग और उत्पादन

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
क्षमता	मी.टन	91,450	91,450	91,530	86,030
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	100	94
क्षमता उपयोग	%	107	108	107	105
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	100	98
उत्पादन	मी.टन	98,276	99,319	97,953	90,781
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	100	92

66. घरेलू उद्योग की क्षमता की गणना समान वस्तु के 50% सांद्रण की क्षमता के लिए की गई है। आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष से लेकर 2005-06 तक घरेलू उद्योग में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह 91,450 की स्थिर क्षमता पर बना रहा। मै. नेशनल पेट्रोक्साइड लि. (एनपीएल) ने क्षमता में 14000 मी.टन की वृद्धि की। तथापि, बढ़ी हुई अक्षमता नवंबर, 2006 में शुरू हुई। जांच अवधि के दौरान उपलब्ध क्षमता 86,030 मी.टन की थी क्योंकि एनपीएल ने विस्तार के प्रयोजनार्थ जांच अवधि में संयंत्र बंद कर दिया था। मै. गुजरात अल्कलीज एंड केमिकल्स लि. (जीएसीएल) ने दहेज में एक संयंत्र स्थापित कर 25,080 मी.टन की क्षमता जोड़ी है, लेकिन यह संयंत्र जांच अवधि के बाद शुरू हुआ था।

67. घरेलू उद्योग का उत्पादन वर्ष 2003-04 में 98,276 मी.टन हुआ था जो वर्ष 2005-06 में घटकर 97,953 मी.टन और जांच अवधि में घटकर 90,781 मी.टन होने से पूर्व वर्ष 2004-05 में बढ़कर 99,319 मी.टन हो गया। जांच अवधि के दौरान उत्पादन में गिरावट विस्तार के

प्रयोजनार्थ संयंत्र बंद किए जाने के कारण एक उत्पादक की क्षमता उपलब्ध न होने के कारण आई थी ।

68. आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक घरेलू उद्योग की उल्लिखित क्षमता का पूर्ण उपयोग होता रहा । क्षमता उपयोग वर्ष 2003-04 में 107% था जो वर्ष 2005-06 में घटकर 107 % और जांच अवधि में 106% होने से पूर्व वर्ष 2004-05 में बढ़कर 109% हो गया ।

69. आंकड़ों से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग की उपलब्ध क्षमता और विचाराधीन उत्पाद के मांग के बीच अंतर था । घरेलू उद्योग ने आधार वर्ष से जांच अवधि तक उपलब्ध क्षमता का पूर्ण उपयोग किया । आयात देश में विचाराधीन उत्पाद की मांग एवं आपूर्ति में अंतर को पाटने के लिए जरूरी थे ।

(ग) घरेलू उद्योग की बिक्री

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
घरेलू बिक्री (खुली)	मी..टन	51,867	61,000	59,273	58,513
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	118	114	113
घरेलू बिक्री (डिब्बाबंद)	मी..टन	35,683	32,681	35,608	33,095
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	92	100	93
घरेलू बिक्री (कुल)	मी..टन	88,762	94,925	96,138	92,775
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	107	108	105

70. बिक्री संबंधी आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री में वर्ष 2004-05 में 7%, 2005-06 में 8% और जांच अवधि में 5% की वृद्धि हुई। तत्काल पूर्व वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बिक्री में गिरावट आई...। आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में संबद्ध वस्तु की खुले रूप में बिक्री में जांच अवधि में 13% की वृद्धि हुई । लेकिन डिब्बाबंद सामग्री के मामले में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बिक्री घटकर 93% हो गई ।

घ) मांग तथा बाजार हिस्सा

मांग	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
घरेलू उद्योग की बिक्री	मी.ट.	88,762	94,925	96,138	92,775
कुल आयात	मी.ट.	6,198	12,510	19,246	30,747
कुल मांग	मी.ट.	94,960	1,07,435	1,15,384	1,23,522
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	113	122	130
मांग में बाजार हिस्सा					
घरेलू उद्योग	%	93.47	88.36	83.32	75.11
चीन	%	0.57	4.99	4.07	9.25
इंडोनेशिया	%	3.18	2.44	1.58	1.69
कोरिया	%	1.35	1.10	4.23	2.02
तुर्की	%	-	0.94	5.23	9.46
ईयू	%	1.00	0.65	0.16	1.55
संबद्ध देश	%	6.33	10.12	15.27	23.97
अन्य देशों से आयात	%	0.20	1.53	1.40	0.92

71. आंकड़ों से यह पता चलता है कि संबद्ध वस्तु की मांग में आधार वर्ष से जांच अवधि तक लगातार वृद्धि होती रही है। इसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 30% की वृद्धि हुई। संबद्ध देशों का बाजार हिस्सा वर्ष 2003-04 में 8.33% से बढ़कर जांच अवधि में 23.97% हो गया। लेकिन इसी अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का हिस्सा 93.47% से घटकर 75.11% हो गया। अन्य देशों के हिस्से में पर्याप्त परिवर्तन नहीं हुआ। यह वर्ष 2003-04 में 0.2% था जो जांच अवधि में बढ़कर 0.9% हो गया। प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयातों का बाजार हिस्सा बढ़ती हुई मांग एवं देश में समान वस्तु की आपूर्ति की कमी के मद्देनजर बढ़ने के लिए जरूरी था।

(ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

72. संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत पर प्रभाव की जांच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनीकरण, यदि कोई है, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ डिब्बाबंद उत्पाद हेतु घरेलू उद्योग की भारत औसत उत्पादन लागत, भारत औसत निवल बिक्री प्राप्ति (एनएसआर) तथा क्षति रहित कीमत एनआईपी की तुलना संबद्ध देशों से आयातों की पहुंच लागत के साथ की गई है। क्योंकि आयात मुख्यतः डिब्बा बंद रूप में हकए गए हैं।

(i) विचाराधीन उत्पाद की तुलना में कीमत मूल्यांकन

निर्यात कीमत	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-विश्व. 06
चीन	रु./मी.टन	12,003	16,727	14,579	15,037
इंडोनेशिया	रु./मी.टन	9,490	12,989	15,387	16,181
कोरिया	रु./मी.टन	13,473	17,153	18,152	16,462
तुर्की	रु./मी.टन	0	18,172	18,212	18,370
ई यू	रु./मी.टन	13,341	19,890	19,418	16,601
संबद्ध देश	रु./मी.टन	11,316	16,199	15,709	15,885

73. कीमत संबंधी आंकड़ों से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से भारत औसत निर्यात कीमत में वर्ष 2004 में वृद्धि हुई और 2005-06 में गिरावट आई लेकिन जांच अवधि में इसमें पुनः वृद्धि हो गई।

(ii) कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री संबंधी प्रभाव

देश	चीन	इंडोनेशिया	कोरिया	तुर्की	ई यू
एनएसआर-घ.उ.	***	***	***	***	***
सीआईएफ आयात कीमत	15,037	16,181	16,462	18,370	16,601
आयातों की पहुंच कीमत	16,999	18,292	18,610	18,508	18,767
कीमत कटौती					
राशि	***	***	***	***	***
%	***	***	***	***	***
एनआईपी-घ.उ.	***	***	***	***	***
कम कीमत पर बिक्री					
राशि	***	***	***	***	***
%	***	***	***	***	***

74. घरेलू उद्योग की भारत निवल बिक्री प्राप्ति के निर्धारण में घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत रिबेट, छूट और कमीशन और संदर्भ केन्द्रीय उत्पाद शुल्क की छूट प्रदान की गई है।

75. कीमत कटौती का निर्धारण जांच अवधि के लिए प्रत्येक संबद्ध देश से पाटित आयातों के भारत औसत पहुंच मूल्य की तुलना उसी अवधि के लिए घरेलू उद्योग की डिब्बाबंद सामग्री की भारत औसत निवल बिक्री प्राप्ति के साथ करके किया गया है। इस प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य को मणना 1% हैंडलिंग प्रभार तथा लागू मूल सीमाशुल्क को संबद्ध देशों से आयात कीमत के डीजीसीआईएंडएस के आंकड़ों में सूचित मूल्य में जोड़कर की गई है। संबद्ध देशों से कीमत कटौती जांच अवधि के दौरान 8-17% के बीच रही थी।

76. कम कीमत पर बिक्री के निर्धारण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देशों से आयातों की भारत औसत पहुंच कीमत की तुलना जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत के साथ की गई है। इससे यह पता चलता है कि कम कीमत पर बिक्री 18-26% के बीच रही थी।

(iii) पाटित आयातों का कीमत ह्रासकारी एवं न्यूनकारी प्रभाव:

77. पाटित आयातों के कीमत ह्रासकारी प्रभाव की जांच भी उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और संबद्ध देशों से पहुंच मूल्य के संदर्भ में की गई है।

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
बिक्री(एनएसआर)-खुले रूप में	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	114	120	118
बिक्री(एनएसआर)-डिब्बा बंद	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	123	109	115
बिक्री(एनएसआर)-औसत	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	115	115	115
बिक्री लागत-खुले रूप में	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	112	118
बिक्री लागत-डिब्बा बंद	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	115	121
बिक्री लागत-औसत	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	102	112	119
लाभ/हानि - खुले रूप में	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	285	224	119
लाभ/हानि-डिब्बाबंद	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	346	35	29
लाभ/हानि-औसत	रु./मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	306	153	86

78. आंकड़ों से यह पता चलता है कि औसत बिक्री प्राप्ति (खुले एवं डिब्बा बंद रूप में) में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 16% की वृद्धि हुई। रुपए के रूप में कीमत में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 2709 रुपए की वृद्धि हुई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में कीमत में 133 रुपए की वृद्धि हुई। बिक्री लागत संबंधी आंकड़ों से यह पता चलता

है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बिक्री की औसत लागत (खुले एवं डिब्बा बंद रूप में) में 19% की वृद्धि हुई। रूपए के रूप में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में इसमें 2,881 रूपए की वृद्धि हुई। लागत में तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 957 रूपए की वृद्धि हुई। आधार वर्ष के 100 की तुलना में जांच अवधि में औसत लाभप्रदता (खुले एवं डिब्बाबंद रूप में) घटकर 86% हो गई। रूपए के रूप में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में इसमें 172 रूपए की गिरावट आई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में इसमें 825 रूपए की भारी गिरावट आई।

79. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान खुले रूप में इस सामग्री की बिक्री कीमत में 18% की वृद्धि हुई। रूपए के रूप में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 2880 रूपए की वृद्धि हुई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में कीमत में 325 रूपए की गिरावट आई। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में खुले रूप में बिक्री लागत 18% बढ़ गई। रूपए के रूप में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 2653 रूपए की वृद्धि हुई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में इसमें 963 रूपए की वृद्धि हुई। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में खुले रूप में उत्पाद की लाभप्रदता में 19% की वृद्धि हुई। रूपए के रूप में इसमें आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 227 रूपए की वृद्धि हुई। तथापि, तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 1288 रूपए की गिरावट आई।

80. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान डिब्बाबंद रूप में इस सामग्री की बिक्री कीमत में 15% की वृद्धि हुई। रूपए के रूप में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें 2648 रूपए की वृद्धि हुई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में कीमत में 973 रूपए की वृद्धि हुई। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में डिब्बाबंद रूप में बिक्री लागत 21% बढ़ गई। रूपए के रूप में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 3536 रूपए की वृद्धि हुई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में इसमें 1050 रूपए की वृद्धि हुई। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में डिब्बाबंद रूप में उत्पाद की लाभप्रदता में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई। रूपए के रूप में इसमें आधार वर्ष के 100 की तुलना में जांच अवधि में घटकर 29% रह गई। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इसमें रूपए के रूप में 888 रूपए की गिरावट आई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में इसमें 78 रूपए की गिरावट आई।

81. उपर्युक्त आंकड़ों से यह पता चलता है कि बिक्री कीमत बिक्री लागत में वृद्धि के अनुरूप नहीं हो सकी जिससे लाभप्रदता में गिरावट आई। डिब्बाबंद रूप में उत्पाद के मामले में प्रवृत्ति काफी अधिक रही और लाभप्रदता में तेजी से गिरावट आई। इससे यह पता चलता है कि संमान वस्तु की कीमत बिक्री लागत में वृद्धि के अनुरूप नहीं हुई जिससे कीमत ह्रास का पता चलता है।

च.5 क्षति संबंधी अन्य मानदंडों की जांच

82. घरेलू उद्योग की मात्रा और कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव और आयातों की मात्रा एवं मूल्य, घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा बिक्री एवं विभिन्न खंडों के बाजार हिस्से के साथ मांग की पद्धति की पूर्ववर्ती खंड में जांच करने के बाद ऐसे अन्य आर्थिक मापदंडों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति की मौजूदगी का पता चल सकता है।

i) लाभ एवं नकद प्रवाह पर वास्तविक तथा संभावित प्रभाव

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
पीबीआईटी-घरेलू बिक्री	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	213	120	84
पीबीआईटी-घरेलू बिक्री	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	327	165	90
घरेलू बिक्री पर मूल्यहास	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	104	109	111
कार्यशील पूंजी में परिवर्तन	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	-100	66	32	34
नकद प्रवाह	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	118	88	69

83. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष में 100 की तुलना में जांच अवधि के दौरान सूचीबद्ध रूप में ब्याज एवं करपूर्व लाभ (पीबीआईटी) घटकर 84 रह गया। उत्पादकों में से दो उत्पादक बहुउत्पाद, बहु स्थानी कंपनियां हैं। अतः नकद प्रवाह की स्थिति समान उत्पाद की लेखा बहियों से उपलब्ध नहीं होती है और इसलिए नकद प्रवाह का निर्धारण कर पूर्व लाभ (पीबीटी), मूल्यहास एवं कार्यशील पूंजी में परिवर्तन को जोड़कर किया गया है। आंकड़ों से पता चलता है कि वर्ष 2004-05 में नकद प्रवाह में वृद्धि हुई और तत्पश्चात वर्ष 2005-06 तथा जांच अवधि में गिरावट आई।

ii) निवेश पर आय और पूंजी जुटाने की क्षमता

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
लगाई गई निवल पूंजी (एनएफए आधारित)	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	108	111	120
घरेलू बिक्री पर पीबीआईटी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	213	120	84
निवेश पर आय	%	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	191	111	67

	इकाई	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
निवेश में वृद्धि	लाख रुपए	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	33.4	172.3

84. आंकड़ों से यह पता चलता है कि वर्ष 2003-04 में 100 (सूचीबद्ध) के आधार के साथ लगाई गई पूंजी पर आय (निवल नियत परिसंपत्ति आधार पर) बढ़कर वर्ष 2004-05 में 191 हो गई और तत्पश्चात वर्ष 2005-06 में घटकर 111% और जांच अवधि के दौरान 67% हो गई।

85. घरेलू उद्योग के दो उत्पादकों ने क्षमता में वृद्धि की है। एक उत्पादक (एनपीएल) ने *** करोड़ रुपए के निवेश से क्षमता में 14,000 मी.टन की वृद्धि की। बढ़ी हुई यह क्षमता नवंबर, 2006 में शुरू हुई। दूसरे उत्पादन (जीएसीएल) में *** करोड़ रुपए के निवेश से 25,080

मी.टन की क्षमता जोड़ते हुए बहेज में एक नया संयंत्र स्थापित किया है इसकी शुरुआत जांच अवधि के बाद हुई है। घरेलू उद्योग ने स्पष्ट किया है कि "यह सच है कि पाटन से पूंजी निवेश करने के लिए इन कंपनियों की क्षमता प्रभावित नहीं हुई है, यह भी स्पष्ट हो जाता है कि कोई पूंजी निवेश उस उत्पाद की उचित बाजार कीमत की संभावनाओं पर आधारित होता है। इसके अलावा, उत्पाद के सतत पाटन के कारण अंततोगत्वा पूंजी निवेश पर प्रभाव पड़ना जरूरी है।"

iii) उत्पादकता

86. प्रति व्यक्ति उत्पादन से संबंधित आंकड़ों से यह पता चलता है कि वर्ष 2004-05 में उत्पादकता में वृद्धि हुई, किन्तु वर्ष 2005-06 और जांच अवधि में गिरावट आई।

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
प्रति दिवस उत्पादन	मी.ट.	***	***	***	***
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***	***	***	***
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.ट.	***	***	***	***

iv) रोजगार तथा मजदूरी

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
कर्मचारी	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	99	99
प्रति कर्मचारी वेतन एवं मजदूरी	रुपए/लाख	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	118	117

87. आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक कर्मचारियों की संख्या में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ। तथापि, आधार वर्ष की तुलना में मजदूरी में जांच अवधि में 17% की वृद्धि हुई।

v) माल सूची

	इकाई	2003-04	2004-05	2005-06	जन.-दिसं. 06
औसत मालसूची	मी.ट.	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	167	250	179

88. आंकड़ों से यह पता चलता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में औसत मालसूची में 79% की वृद्धि हुई। तथापि, पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में औसत मालसूची में गिरावट आई। जांच अवधि में गिरावट आने से पूर्व वर्ष 2005-06 तक दिवसों की बिक्री की संख्या के रूप में औसत मालसूची में वृद्धि होती रही। वर्ष 2003-04 में यह 4 दिन के समतुल्य थी जो जांच अवधि में घटकर 8 दिन होने से पूर्व वर्ष 2005-06 में बढ़कर 11 दिन हो गई।

vi) वृद्धि

89. आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक वर्ष-दर-वर्ष आधार पर मांग में सकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित होती है। वर्ष 2004-05 में उत्पादन में वृद्धि सकारात्मक थी लेकिन वर्ष 2005-06 तथा जांच अवधि में यह नकारात्मक हो गई। वर्ष 2004-05 और 2005-06 में बिक्री मात्रा सकारात्मक थी लेकिन जांच अवधि में यह नकारात्मक हो गई। घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वर्ष 2004-05, 2005-06 तथा जांच अवधि में नकारात्मक प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। वर्ष 2004-05 में लाभप्रदता, लाभ (पीबीआईटी), नकद प्रवाह एवं लगाई गई पूंजी पर आय सकारात्मक रही थी और वर्ष 2005-06 एवं जांच अवधि में नकारात्मक हो गई थी।

vii) पाटन की मात्रा

90. जिस सीमा तक घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण क्षति हो सकती है उस सीमा के एक संकेतक के रूप में पाटन की मात्रा से यह पता चलता है कि जांच अवधि के लिए नामजद संबद्ध देशों के विरुद्ध निर्धारित पाटन मार्जिन पर्याप्त है।

viii) कीमत को प्रभावित करने वाले कारक

91. यह देखा गया है कि समान वस्तु के उत्पादन के लिए अपेक्षित कच्ची सामग्री नापथा की कीमत आधार वर्ष में 17,000 रुपए/मी.ट. से बढ़कर जांच अवधि में 28,000 रुपए/मी.ट. हो गई जिससे समान वस्तु के उत्पादन लागत पर प्रभाव पड़ा। यह भी देखा गया है कि वर्ष 2004-05 में आयातित वस्तु के भारित औसत पहुंच मूल्य में पर्याप्त वृद्धि हुई लेकिन वर्ष 2005-06 और जांच अवधि में गिरावट आनी शुरू हो गई। मैंने यह भी देखा है कि भारित औसत पहुंच मूल्य से क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत में कटौती हो रही थी।

92. घरेलू बाजार में कीमत को प्रभावित कर सकने वाले कारकों के विश्लेषण हेतु लागत संरचना में परिवर्तन, यदि कोई हो, घरेलू उद्योग में प्रतिस्पर्धा और प्रतिस्पर्धाकारी पदार्थों की कीमत की जांच की गई है। चूंकि आयात मुख्यतः डिब्बाबंद रूप में किए गए हैं, इसलिए घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत तथा बिक्री कीमत पर आयातों के पहुंचमूल्य के साथ तुलना करने हेतु विचार किया गया है। जांच अवधि के दौरान डिब्बाबंद सामग्री की भारित औसत उत्पादन लागत में 18% की वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान भारित औसत निवल बिक्री कीमत में केवल 14% की वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग का अनुरोध है कि संबद्ध देशों से आयातित सामग्री का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से काफी कम है जिससे भारतीय बाजार में कीमत कटौती हो रही है। जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती 8-17% के बीच और जांच अवधि के दौरान कम कीमत पर बिक्री 18-26% के बीच रही थी।

च.6 क्षति मापदंडों से संबंधित निष्कर्ष

93. उपर्युक्त क्षति संबंधी मापदंडों की जांच से यह पता चलता है कि विचाराधीन उत्पाद में आधार वर्ष (2003-04) से जांच अवधि (जनवरी-दिसंबर, 06) तक लगातार वृद्धि हुई। घरेलू उद्योग की क्षमता में यद्यपि वृद्धि हुई है, किंतु यह जांच अवधि और पूर्ववर्ती वर्ष के दौरान हुई है। तथापि, यह क्षमता देश में मांग की पूर्ति करने हेतु विचाराधीन उत्पाद की आपूर्ति के लिए पर्याप्त नहीं थी। अतः आधार वर्ष से जांच अवधि तक क्षमता का पूर्ण उपयोग होता रहा। इसी अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में 13% की वृद्धि हुई और बिक्री दिवसों के संबंध में औसत मालसूची में

गिरावट आई । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में डिब्बाबंद रूप में समान वस्तु की बिक्री में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है जिससे प्रतिकूल बाजारी स्थितियों का पता चलता है ।

94. आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक 2881 रूपए/मी.टन की बिक्री लागत की तुलना में समान वस्तु की बिक्री कीमत में 2709 रूपए/मी.ट. की वृद्धि हुई । तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में 957 रूपए/मी.ट. की बिक्री लागत में हुई वृद्धि की तुलना में बिक्री कीमत में 133 रूपए/मी.ट. की वृद्धि हुई । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान समान वस्तु की लाभप्रदता में 172 रूपए/मी.ट. की गिरावट आई । तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में लाभप्रदता में 825 रूपए/मी.ट. की गिरावट आई । लाभप्रदता में गिरावट लाभ में गिरावट के रूप में प्रदर्शित हुई जो आधार वर्ष के 100 की तुलना में जांच अवधि में घटकर 84 (सूचीबद्ध) हो गई । इसी प्रकार लगाई गई पूंजी पर आय आधार वर्ष के 100 की तुलना में जांच अवधि में घटकर 67 (सूचीबद्ध) हो गई ।

95. जहां तक मात्रा का संबंध है, घरेलू उद्योग को कोई मात्रात्मक क्षति नहीं हुई है क्योंकि समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की क्षमता का पूर्ण उपयोग होता रहा है । तथापि, वित्तीय रूप में, लाभप्रदता में गिरावट, लाभ एवं लगाई गई पूंजी पर आय से घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चलता है ।

च.7 अन्य ज्ञात कारक

96. ऐसे अन्य कारकों का विश्लेषण किया गया है जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है । इस संबंध में नियमों में यथानिर्धारित निम्नलिखित सांकेतिक कारकों का विश्लेषण किया गया है ।

i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा एवं कीमत

97. अन्य देशों से आयातों की मात्रा केवल 4% है इसलिए इससे घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हो सकती है ।

ii) मांग में कमी और/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

98. क्षति अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु में पर्याप्त वृद्धि देखी गई है । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु की कुल मांग में 30% की वृद्धि हुई है । घरेलू बाजार में इस उत्पादक की खपत पद्धति में भी ऐसा कोई खास परिवर्तन नहीं आया है जिससे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण माना जा सके ।

iii) विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

99. उद्योग में ऐसा कोई प्रतिबंधात्मक व्यवहार प्रचलित नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति पहुंच सकती हो ।

iv) प्रौद्योगिकी विकास

100. उत्पाद के उत्पादन की प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है । अतः किसी अन्य प्रौद्योगिकी के विकास को घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण नहीं माना जा सकता है ।

v) निर्यात निष्पादन

101. समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की निर्यात मात्रा नगण्य रही है। अतः घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण यह कारक नहीं है।

vi) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

102. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान इस अवधि में उत्पादन में आई गिरावट के कारण प्रति कर्मचारी उत्पादन के संबंध में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में कुछ गिरावट प्रदर्शित हुई है।

vii) हिंदुस्तान आर्गेनिक केमिकल्स लि. (एचओसीएल)

103. हिंदुस्तान आर्गेनिक केमिकल्स लि. (एचओसीएल) एक रूग्ण कंपनी घोषित कर दी गई है। इस संबंध में प्राधिकारी ने इस बात का पता लगाने के लिए कि क्या कंपनी की रूग्णता से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है, एचओसीएल के आंकड़ों को अलग रखकर घरेलू उद्योग को हुई क्षति के प्रमुख मापदंडों की जांच की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि समान वस्तु के उत्पादन में वर्ष 2004-05, 2005-06 में वृद्धि हुई और जांच अवधि में गिरावट आई। घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग उत्पादक की उल्लिखित क्षमता से अधिक बना रहा जिसका तात्पर्य यह है कि क्षति अवधि के दौरान क्षमता का पूर्ण उपयोग होता रहा है। समान वस्तु की घरेलू बिक्री (खुले रूप में) में आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2004-05 में 26%, वर्ष 2005-06 में 27% और जांच अवधि में 23% की वृद्धि हुई। समान वस्तु की घरेलू बिक्री (डिब्बा बंद रूप में) वर्ष 2004-05 में 93%, वर्ष 2005-06 में 102% और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 96% रही थी। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में समान वस्तु की कुल घरेलू बिक्री में 11% की वृद्धि हुई। खुले रूप में समान वस्तु के लिए बिक्री कीमत में 2849 रुपए पीएमटी की वृद्धि हुई, बिक्री लागत में 2607 रुपए पीएमटी की वृद्धि हुई और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में लाभप्रदता में 242 रुपए पीएमटी की वृद्धि हुई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में बिक्री कीमत में 404 रुपए पीएमटी की गिरावट आई, बिक्री लागत में 1197 रुपए पीएमटी की वृद्धि हुई और लाभप्रदता में 1602 रुपए पीएमटी की गिरावट आई। डिब्बाबंद रूप में समान वस्तु के लिए बिक्री कीमत में 2650 रुपए पीएमटी की वृद्धि हुई। बिक्री लागत में 3682 रुपए पीएमटी की वृद्धि हुई और लाभप्रदता में आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 1032 पीएमटी की गिरावट आई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में बिक्री कीमत में 968 रुपए पीएमटी की वृद्धि हुई। बिक्री लागत में 1192 रुपए पीएमटी की वृद्धि हुई और लाभप्रदता में 221 रुपए पीएमटी की गिरावट आई। समान वस्तु (खुले और डिब्बाबंद रूप में) के लिए बिक्री कीमत में 2660 रुपए की वृद्धि हुई। बिक्री लागत में 2873 रुपए पीएमटी की वृद्धि हुई और आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान 213 रुपए पीएमटी की गिरावट आई। तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में बिक्री कीमत में 119 रुपए पीएमटी, बिक्री लागत में 1164 रुपए पीएमटी की वृद्धि हुई और लाभप्रदता में 1045 पीएमटी की गिरावट आई।

104. इन प्रमुख मापदंडों से यह पता चलता है कि यद्यपि एचओसीएल के आंकड़ों को घरेलू उद्योग से अलग रखा गया है, तथापि क्षति मापदंडों की प्रवृत्ति एक जैसी बनी रही है।

प्राधिकारी की जानकारी में ऐसा कोई अन्य कारक नहीं आया है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती हो ।

छ. कारणात्मक संबंध

105. पूर्वोक्त विश्लेषण से यह पता चलता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा में समग्र रूप में और मांग में हिस्से की तुलना, दोनों रूप में पर्याप्त वृद्धि हुई है ।

106. विचाराधीन उत्पाद की मांग में सतत वृद्धि प्रदर्शित होती है । उपलब्ध सूचना के अनुसार घरेलू उद्योग बढ़ती हुई मांग को पूरा करने की स्थिति में नहीं था क्योंकि उनकी क्षमता का पूर्ण उपयोग होता रहा । तथापि, बिक्री की पद्धति में हुए परिवर्तन से बाजार में डिब्बाबंद सामग्री की बिक्री में कठिनाई का पता चलता है । डिब्बाबंद सामग्री की बिक्री आधार वर्ष में हुई 35683 मी.ट. की तुलना में जांच अवधि में घटकर 33095 मी.ट. हो गई । मांग और आपूर्ति के बीच अंतर को पाटने के लिए देश में आयात किए जा रहे थे लेकिन पहुंच मूल्य से आयातों द्वारा घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में की जा रही कटौती का पता चलता है । आयात मुख्यतः डिब्बाबंद रूप में किए जा रहे थे । इसलिए इन आयातों का प्रभाव बिक्री मात्रा, बिक्री कीमत और समान वस्तु के डिब्बा बंद रूप में लाभप्रदता के संबंध में देखा जाता है । डिब्बाबंद सामग्री की बिक्री कीमत में आधार वर्ष से लेकर जांच अवधि तक 3536 रूपए पीएमटी की बिक्री लागत में हुई वृद्धि की तुलना में 2648 रूपए पीएमटी की वृद्धि हुई । तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में 1050 रूपए पीएमटी की बिक्री लागत में हुई वृद्धि के मुकाबले बिक्री कीमत में 973 रूपए पीएमटी की वृद्धि हुई । आधार वर्ष के 100 की तुलना में जांच अवधि में लाभप्रदता घटकर 29 (सूचीबद्ध हो गई) । रूपए के रूप में इसी अवधि के दौरान लाभप्रदता में 888 रूपए पीएमटी की गिरावट आई । तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में लाभप्रदता में 78 रूपए पीएमटी की गिरावट आई । औसत बिक्री कीमत (डिब्बाबंद एवं खुली सामग्री) से यह भी पता चलता है कि बिक्री कीमत में बिक्री लागत में हुई वृद्धि के अनुरूप बढ़ोत्तरी नहीं हुई जिससे कीमत ह्रास का पता चलता है । अतः आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में लाभप्रदता में 172 रूपए पीएमटी की गिरावट आई । तथापि, तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में लाभप्रदता में 825 रूपए पीएमटी की भारी गिरावट आई ।

107. मांग में मजबूत वृद्धि और घरेलू उद्योग की क्षमता के उपयोग के बावजूद प्राधिकारी की जानकारी में ऐसा कोई कारण नहीं आया है जिसकी वजह से घरेलू उद्योग समान वस्तु की बिक्री लागत में वृद्धि के अनुरूप कीमत बढ़ाने की स्थिति में न रहा हो । तथापि, आयातों से घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती हो रही है और समान वस्तु की कीमत में ह्रास हो रहा है जिससे लाभप्रदता, लाभ तथा लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट आई है । इससे संबद्ध वस्तु के पाटन और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की पुष्टि होती है ।

ज. निष्कर्ष

108. पूर्वोक्त से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि:

क. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का भारत को निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम कीमत पर किया गया है ;

- ख. घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ;
ग. यह क्षति संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई है ।

झ. भारतीय उद्योग का हित और अन्य मुद्दे

108. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क का प्रयोजन सामान्यतः पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहारों द्वारा घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में खुली एवं उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति बहाल की जा सके जो देश के सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपाय लागू किए जाने से संबद्ध देशों से होने वाले आयात किसी भी रूप में प्रतिबंधित नहीं होंगे और इसलिए उपभोक्ताओं के लिए उत्पादों की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी ।

क्षति मार्जिन

109. डिब्बाबंद उत्पाद की क्षति रहित कीमत की तुलना क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है । संबद्ध देशों से क्षति मार्जिन निम्नानुसार निकाला गया है :-

देश का नाम	क्षति मार्जिन (रु./मी.ट.)
चीन जन.गण.	***
इंडोनेशिया	***
कोरिया आरओके	***
टर्की	***
ईयू	***

ट. सिफारिशें:

110. उपर्युक्त को देखते हुए प्राधिकारी नीचे निर्धारित विधि और रीति से संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क को आवश्यक समझते हैं और उसकी सिफारिश करते हैं ।

111. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन, जो भी कम हो, के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त हो सके । तदनुसार संबद्ध देशों के मूल के या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित तालिका के कालम 8 में उल्लिखित राशि और पहुंच मूल्य के बीच के अंतर के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	टैरिफ मद	वस्तु का विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	28470000	हाइड्रोजन पेरॉक्साइड	चीन जन.गण.	चीन जन.गण.	कोई भी	कोई भी	24,100	मी.ट.	अम.डॉ.
2.	वही	वही	चीन जन.गण.	चीन जन.गण. से मित्र कोई देश	कोई भी	कोई भी	24,100	मी.ट.	अम.डॉ.
3.	वही	वही	संबद्ध देशों से मित्र कोई देश	चीन जन.गण.	कोई भी	कोई भी	24,100	मी.ट.	अम.डॉ.
4.	वही	वही	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	कोई भी	कोई भी	22,337	मी.ट.	अम.डॉ.
5.	वही	वही	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया से मित्र कोई देश	कोई भी	कोई भी	22,337	मी.ट.	अम.डॉ.
6.	वही	वही	संबद्ध देशों से मित्र कोई देश	इंडोनेशिया	कोई भी	कोई भी	22,337	मी.ट.	अम.डॉ.
7.	वही	वही	कोरिया आरओके	कोरिया आरओके	कोई भी	कोई भी	23,082	मी.ट.	अम.डॉ.
8.	वही	वही	कोरिया आरओके	कोरिया आरओके से मित्र कोई देश	कोई भी	कोई भी	23,082	मी.ट.	अम.डॉ.
9.	वही	वही	संबद्ध देशों से मित्र कोई देश	कोरिया आरओके	कोई भी	कोई भी	23,082	मी.ट.	अम.डॉ.
10.	वही	वही	टर्की	टर्की	कोई भी	कोई भी	23,173	मी.ट.	अम.डॉ.
11.	वही	वही	टर्की	टर्की से मित्र कोई देश	कोई भी	कोई भी	23,173	मी.ट.	अम.डॉ.
12.	वही	वही	संबद्ध देशों से मित्र कोई देश	टर्की	कोई भी	कोई भी	23,173	मी.ट.	अम.डॉ.
13.	वही	वही	यूरोपीय यूनियन	यूरोपीय यूनियन	कोई भी	कोई भी	23,173	मी.ट.	अम.डॉ.
14.	वही	वही	यूरोपीय यूनियन	ई यू से मित्र कोई देश	कोई भी	कोई भी	23,173	मी.ट.	अम.डॉ.
15.	वही	वही	संबद्ध देशों से मित्र कोई देश	यूरोपीय यूनियन	कोई भी	कोई भी	23,173	मी.ट.	अम.डॉ.

112. इस प्रयोजनार्थ आयक्तों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथाआकलित निर्धारणीय मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के अंतर्गत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर समस्त सीमाशुल्क शामिल होंगे।

113. केन्द्र सरकार द्वारा इस जांच परिणाम को स्वीकार किए जाने के बाद इसके खिलाफ कोई अपील वर्ष 1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ नियम, 1995 के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकती।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 18th July, 2008

FINAL FINDINGS

Subject : Anti-dumping investigations involving imports of Hydrogen Peroxide originating in or exported from China PR, European Union, Indonesia, Korea ROK and Turkey.

No. 14/17/2006-DGAD.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

2. Whereas M/s National Peroxide Ltd., Mumbai, M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd., Vadodara, M/s Asian Peroxide Ltd., Chennai and M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd., Mumbai (hereinafter referred to as the Applicant) have filed an application before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority), in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, alleging dumping of Hydrogen Peroxide (herein after referred to as subject goods), originating in or exported from China PR, European Union, Indonesia, Korea ROK and Turkey (hereinafter referred to as subject countries) and requested for initiation of Anti Dumping investigations for levy of anti dumping duties on the subject goods. The Authority notified the Embassies of subject countries about the receipt of dumping allegation in accordance with sub rule 5(5) of the Rules.

3. And Whereas, the Authority on the basis of sufficient evidence submitted by the applicant on behalf of the domestic industry, issued a public notice dated 20th July 2007 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating Anti-Dumping investigations concerning imports of the subject goods originating in or exported from the subject countries in accordance with the sub-Rule 6(1) of the Rules to determine the existence, degree and effect of alleged dumping and to recommend the amount of antidumping duty, which if levied would be adequate to remove the injury to the domestic industry.

A. General

4. Procedure described below has been followed with regard to this investigation after issuance of the public notice notifying the initiation of the above investigations by the Authority: -

- (i) The Designated Authority sent copies of initiation notification dated 20.7.2007 to the Embassies of the subject countries in India, known exporters from the subject countries, importers and the domestic industry as per the addresses made available by the applicant and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation notification.
- (ii) The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known exporters and to the Embassies of subject countries in accordance with Rule 6(3) supra.
- (iii) The Embassies of the subject countries in India, were informed about the initiation of the investigation in accordance with Rule 6(2) with a request to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time. A copy of the letter and questionnaire sent to the exporters were also sent to them, along with the names and addresses of the exporters.
- (iv) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information to the known exporters in subject countries in accordance with Rule 6(4);
- (v) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years and the period of investigation. Imports data procured from DGCI&S has been relied upon in this findings;
- (vi) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties in accordance with Rule 6(7);
- (vii) In response to the above said notification none of the exporters from the subject countries filed their responses to questionnaire. M/s Pusula from Turkey sought extension through Turkish Embassy for filing the exporter's response, however, no response was filed even within the extended time. The Turkish Embassy made submissions concerning dumping and injury to the domestic industry, the same has been taken into consideration in this findings.
- (viii) In response to above notification none of the importers filed response to questionnaire.
- (ix) The exporters/importers who have not filed the information have been treated as non-cooperating exporters/importers.
- (x) The Authority held a Public Hearing on 6.5.2008 to hear the interested parties. The parties attending the Public Hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally. The Designated Authority considered the submissions as received from the interested parties in the findings.
- (xi) The Authority verified the information, of the domestic industry to the extent necessary.
- (xii) Optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India based on the information furnished by the applicant on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) was worked out so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- (xiii) Investigation was carried out for the period starting from 1st January 2006 to 31st December 2006 (POI). The examination of trends in the context of injury analysis covered the periods from April 2003-March 2004, April 2004-March 2005, April 2005-March 2006 and the POI.
- (xiv) In accordance with Rule 16 of Rules Supra, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to known interested parties and comments received thereon have also been duly considered in these findings.

- (xv) *** in this Notification represents information furnished by the applicant on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.

B. Product under Consideration

5. The product under consideration is 'Hydrogen Peroxide'. The Hydrogen Peroxide is an inorganic chemical. Hydrogen peroxide has strong oxidizing properties and is therefore a powerful bleaching agent that has found use as a disinfectant, as an oxidizer, and in rocketry (particularly in high concentrations as high – test peroxide (HTP) as a monopropellant) and in bipropellant systems. Hydrogen Peroxide is classified under Chapter 28 of Custom Tariff Act under the sub-heading 28470000.

6. The product is a pale blue liquid, which appears clear in a dilute solution, slightly more viscous than water. It is water like in appearance, free from suspended impurities and miscible with water in all proportions. It is used in manufacture of bulk pharmaceuticals, agro-chemicals, dyestuffs, certain explosives and downstream chemicals. Hydrogen Peroxide finds application in -

- odor control
- corrosion control
- inorganic and organic oxidation
- toxicity reduction/ biodegradability improvement
- disinfection/ bio-control
- paper and pulp bleaching
- manufacture of peroxides and epoxides
- therapeutic uses as an antiseptic and antibacterial agent

B.1 Like Article

7. The 'Hydrogen Peroxide' manufactured by domestic industry is identical to the product under consideration, therefore, is being treated as like article for the purpose of this Investigation.

C. Standing of the Applicant and Domestic Industry

8. The application was filed by M/s National Peroxide Ltd., Mumbai, M/s. Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd., Vadodara, M/s Asian Peroxide Ltd., Chennai and M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd., Mumbai, which are the producers of the subject goods in India. The applicants account for 100% production of subject goods in India, therefore, constitute domestic industry within the meaning of 2(b) of the Rules.

9. The Authority notes that M/s Asian Peroxide Ltd. had made imports of approx. *** MT during the POI constituting 3.53% of the total production of the company. In this regard, the Authority has examined the appropriateness or otherwise of inclusion of Asian Peroxide Ltd. in the domestic industry. It has been observed that by excluding the Asian Peroxide Ltd. from domestic industry for small quantity of imports, which may not have significantly impacted the financial performance of the company, the injury to the domestic industry would be partially captured which would not serve the interest of the investigation. The Authority, therefore, in this case has not excluded the Asian Peroxide Ltd. from the composition of the domestic industry.

D. Methodology for Calculation of Dumping Margin

10. The product is sold in the market in loose and packed form. However, imports are largely made in packed form, therefore, the normal value and export prices have been determined for the subject goods in packed form.

Normal Value and Export Price**D.1 China PR****Normal Value for China PR**

10. None of the exporters from China has responded to the initiation notification and submitted any information for determination of dumping and rebuttal of the non-market economy. In the absence of any information from the exporters of China PR, the normal value has been determined as para 7 of Annexure-1 of the Rules by adopting the method 'on any other reasonable basis'. For this purpose, the information available (Far East) in the journal 'Bleaching Chemical' published by Harriman Chemsult has been relied upon. The weighted average prices available for POI has been calculated as US\$*** PMT. Adjustment for freight and other expenses have been made @ US\$*** PMT to arrive at the ex-factory price. By this methodology, the normal value has been calculated as US\$ *** PMT

Export price for Non-cooperating Exporters

11. The data reported by the DGC&S for exports from China has been relied upon to calculate the ex-factory export price. Transaction-wise details from DGC&S data has been taken as US\$ *** PMT. Adjustment on account of ocean freight @ US\$ *** PMT, marine insurance @ 0.15%, inland freight @ 1%, port expenses @ 1%, and bank charges @ 0.25%, have been made to arrive at the ex-factory export price. By adopting the above method, the ex-factory export price has been calculated as US\$ *** PMT.

D.2 European Union**Normal Value for European Union**

12. None of the exporters from European Union has responded to the initiation notification and submitted any information for determination of dumping. In the absence of any information from the exporters of EU, the normal value has been determined on the basis of facts available as per Rule 6(8) of AD Rules. For this purpose, the information available (Europe) in the journal 'Bleaching Chemical' published by Harriman Chemsult has been relied upon. The weighted average prices available for POI has been calculated as US\$*** PMT. Adjustment for freight and other expenses have been made @ US\$*** PMT to arrive at the ex-factory price. By this methodology, the normal value has been calculated as US\$ *** PMT

Export price for Non-cooperating Exporters

13. The data reported by the DGCI&S for exports from European Union has been relied upon to calculate the ex-factory export price. Transaction-wise details from DGCI&S data has been taken as US\$ *** PMT. Adjustments on account of ocean freight @ US\$ *** PMT, marine insurance @ 0.15%, inland freight @ 1%, port expenses @ 1% and bank charges @ 0.25% have been made to arrive at the ex-factory export price. By adopting the above method, the ex-factory export price has been calculated as US\$ *** PMT.

D.3 Turkey

Normal Value for Turkey

14. None of the exporters from Turkey has responded to the initiation notification and submitted any information for determination of dumping. In the absence of any information from the exporters of Turkey, the normal value has been determined on the basis of facts available as per Rule 6(8) of AD Rules. For this purpose, the information available (Europe) in the journal 'Bleaching Chemical' published by Harriman Chemsult has been relied upon. The weighted average prices available for POI has been calculated as US\$*** PMT. Adjustment for freight and other expenses have been made @ US\$*** PMT to arrive at the ex-factory price. By this methodology, the normal value has been calculated as US\$ *** PMT

Export price for Non-cooperating Exporters

15. The data reported by the DGCI&S for exports from Turkey has been relied upon to calculate the export price. Transaction-wise details from DGCI&S data have been taken as US\$ *** PMT. Adjustments on account of ocean freight @ US\$ *** PMT, marine insurance @ 0.15%, inland freight @ 1%, port expenses @ 1% and bank charges @ 0.25% have been made to arrive at the ex-factory export price. By adopting the above method, the net export price has been calculated as US\$ *** PMT.

D.4 Korea ROK

Normal Value for Korea ROK

16. None of the exporters from Korea ROK has responded to the initiation notification and submitted any information for determination of dumping. In the absence of any information from the exporters of Korea ROK, the normal value has been determined on the basis of facts available as per Rule 6(8) of AD Rules. For this purpose, the information available (Far East) in the journal 'Bleaching Chemical' published by Harriman Chemsult has been relied upon. The weighted average prices available for POI has been calculated as US\$*** PMT. Adjustment for freight and other expenses have been made @ US\$*** PMT to arrive at the ex-factory price. By this methodology, the normal value has been calculated as US\$ *** PMT

Export price for Non-cooperating Exporters

17. The data reported by the DGCI&S for exports from Korea has been relied upon to calculate the export price. From the transaction-wise DGCIS data, export price has been taken as US\$ *** PMT. Adjustments on account of ocean freight @ US\$ *** PMT, marine insurance @ 0.15%, inland freight @ 1%, port expenses @ 1% and bank charges @ 0.25% have been made to arrive at the ex-factory export price. By

adopting the above method, the ex-factory export price has been calculated as US\$ *** PMT.

D.5 Indonesia

Normal Value for Indonesia

18. None of the exporters from Indonesia has responded to the initiation notification and submitted any information for determination of dumping. In the absence of any information from the exporters of Indonesia, the normal value has been determined on the basis of facts available as per Rule 6(8) of AD Rules. For this purpose, the information available (Far East) in the journal 'Bleaching Chemical' published by Harriman Chemsult has been relied upon. The weighted average prices available for POI has been calculated as US\$*** PMT. Adjustment for freight and other expenses have been made @ US\$*** PMT to arrive at the ex-factory price. By this methodology, the normal value has been calculated as US\$ *** PMT

Export price for Non-cooperating Exporters

19. The data reported by the DGCI&S for exports from Indonesia has been relied upon to calculate the export price. From the transaction-wise DGCI&S data, export price has been taken as US\$ *** PMT. Adjustments on account of ocean freight @ US\$ *** PMT, marine insurance @ 0.15%, inland freight @ 1%, port expenses @ 1% and bank charges @ 0.25% have been made to arrive at the ex-factory export price. By adopting the above method, the ex-factory export price has been calculated as US\$ *** PMT.

F. Dumping Margin

20. On the basis of normal values and export prices as determined above, the dumping margins for exporters/ producers in the subject countries are determined as per table below: -

Exporter/Producer	Normal Value (US\$)	Export Price (US\$)	Dumping Margin (US\$)	Dumping Margin (%)
China PR	***	***	***	36.74
European Union	***	***	***	51.54
Turkey	***	***	***	49.14
Korea ROK	***	***	***	30.13
Indonesia	***	***	***	26.24

21. The dumping margins so determined are significant and above *de minimis*.

G. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF CAUSAL LINK

G.1 Submissions made by the domestic industry

a) The total sales (loose and packed) of the domestic industry declined significantly after showing a significant increase up to 2005-06. The volume of packed sales has, however, declined throughout the injury period. Packed

- sales of the domestic industry declined by about 11% even when the demand increased by about 27%. It would be seen that the import volumes in absolute term increased vis-à-vis sales of domestic industry declined. There is direct relationship between the import volumes, import price, sales volumes and market share of the domestic industry. Import volumes increased because of availability of the material at dumped prices, due to which sales of domestic industry declined.
- b) Profits: - Profitability of the domestic industry has significantly eroded. Even when the domestic industry attempted to maintain its market, the impact of the same was very adverse in terms of profits, which declined significantly. The profitability of the domestic industry declined sharply in 2005-06 and the period of investigation.
 - c) It would be worthy to mention that significant decline in profits is in spite of significant reduction in interest costs. In other words, whereas the profits should have improved on account of reduction in interest costs, the same has rather declined. Employment level with the domestic industry has declined.
 - d) Productivity: - Productivity of the domestic industry declined. Petitioners submit that so severe is the adverse impact of dumping that even productivity of the domestic industry has suffered in spite of significant increase in demand. Any producer of the product would like to increase production. However, so severe has been the impact of dumping that the domestic industry has been forced to cut production.
 - e) Return on capital employed: - For the purpose of calculation of return on investments, petitioners have considered sum of fixed assets and working capital and profit before interest and taxes. The information shows the domestic industry has been able to make meagre return on investments. The decline in ROI is a direct consequence of decline in profits.
 - f) Output and Capacity Utilization: - Domestic industry has enhanced its capacity for production of subject goods in view of rising demand. However, severe pressure on domestic industry from dumped imports resulted in production cuts being resorted by the domestic industry, resulting in decline in capacity utilization. The production of packed material declined throughout the investigation period.
 - g) Output and capacity utilization of the domestic industry declined in spite of the fact that the domestic industry decided to offer sub-optimal prices.
 - g) Inventories: - Inventory level of the domestic industry increased. Increase in inventories is in spite of lower prices offered by domestic industry.
 - i) Salary & wages: - Salary and wages with the domestic industry increased.
 - j) Cash Profit: - Deterioration in profits of the domestic industry adversely affected cash profits of the domestic industry in 2005-06 and the period of investigation. Petitioners have determined cash profits for the product under consideration.
 - k) Demand and market share: - Whereas the market shares of the imports have increased, that of the domestic industry has declined.
 - l) Growth: - Growth of the domestic industry in a number of parameters shows negative trend.

22. It has been submitted that the domestic industry has suffered material injury. It can be concluded that the domestic industry is trapped in a vicious cycle of volume effect and price effect. First with the increase of the imports of the subject good from the subject countries into the Indian market as a result of excess capacity with the Foreign Producers, the domestic industry suffered from loss of sale and loss of market share. This resulted in adverse volume effect. This loss of sale forced the

domestic industry to reduce their domestic selling price in order to sell the subject good in the domestic market. This resulted in adverse price effect. The exporters further reduced the selling price. As a result, the domestic industry reduced the selling price further and the process continued. Resultantly, domestic industry faced adverse volume effect and adverse price effect as a result of distortive and unfair trade practices of the exporting countries.

Threat of Material Injury

23. In addition to the material injury already being suffered by the domestic industry, imports from subject countries are posing threat of material injury to the domestic industry.

24. There is significant increase in the import volumes in absolute term as would be seen from the increase in import volumes. This increase in imports is in spite of best efforts of the domestic industry to sell their material even at sub-optimal prices. The increase in imports would have been more, had the domestic industry not made efforts to curtail the same by offering lower prices;

25. The price undercutting is significant. At any point of time and in spite of offering matching prices, there is a positive price difference between the domestic product and imported product. Given nature of the product involved, any price difference between the domestic product and imported product is not acceptable to the consumers and the domestic industry is under constant pressure for price reductions. It may be noted that it is not such a product that the domestic industry can afford to sell at prices significantly higher than the imported prices. The only option with the domestic industry is to sell at matching prices. The nature of the product is such that even a small price difference is in fact huge in this kind of product;

26. Capacities created by the producers in the subject countries are far more than their respective domestic demand. These producers are in fact saddled with excess capacity, which is significantly higher than consumption in their respective markets. Due to excess capacity in the subject countries, producers have been forced to reduce their prices.

27. While inventories of the article with the domestic industry are showing increase in spite of significant reduction in the selling prices by the domestic industry, it is understood that the producers in subject countries are saddled with higher inventories. However, no published information is available in this regard.

28. Petitioners conducted extensive analysis of exports from subject countries to world over. The analysis was shocking in terms of its likely impact on the domestic industry. World exports of subject countries are showing increasing trends, clearly implying surplus unutilized capacities with the Foreign Producers.

G.2 Submissions made by Embassy of Turkey

29. The analysis of the non-confidential version of the petition and some petitioner's financial statements obtained through their official websites shows that no causal link could be established between material injury to Indian domestic market

and Turkish originating imports. Nevertheless, the non-confidential version of the petition contains significant amount of biased and self-contradictory information about material injury and its fails to analyse all known factors.

30. While the custom duties are decreased on the subject product and petitioners are not competitive enough in the international market as an exporter of the subject product, it is understood that the petitioners aim to protect oligopolistic structure of the Indian hydrogen peroxide market. Actually, it is realized from the non-confidential version of the petition that the complainants are in a fair condition in terms of return in investment, capital employed, utilization of capacity and wages in particular. Under these positive conditions, any injury that petitioners claim to suffer may occur from their own problems rather than the import of the subject product.

31. Besides, in the non-confidential version of the petition, Israel and Thailand are considered among China PR, Indonesia, South Korea, the EU and Turkey that are causing material injury whereas they are not mentioned in the initiation notification. Turkish Government seeks clarification, unlike Turkey, why these two countries are not involved in the investigation. Turkish Government is of the view that any injury caused by the imports from any other country could not be attributed to Turkish originating imports.

i. Economic Parameters of the Domestic Industry

32. In the non-confidential version of the petition, it is claimed that there is a decline in sales, profits, output, growth, market share of domestic industry, employment, productivity, return on investments and capacity utilization and in this framework the domestic industry has suffered material injury and is threatened with material injury. In fact, following information in some petitioner's official websites rebuts these claims:

a) Gujarat Alkalies & Chemicals Limited (GACL)

- Production & Profit

33. In the 33rd Annual Report of Gujarat Alkalies & Chemicals Limited (GACL) it is stated that *"The Company is expanding its capacities for Caustic Soda and Hydrogen Peroxide."* And *"With the improvement in the industrial demand and up-trend in the commodity cycle during 2005-06, demand for the Company's product has remained buoyant. The company has been able to improve operating margins from 20.14% in FY01 to 35.18% in FY06"*. For 2005-06 period which is one of the periods covered by the injury investigation.

34. The number of employee of GACL increased from 1395 in 2005 to 1529 in 2006. Again, in the related reports, it is stated that *"Your Company performed very well during the year 2005-06. The year under review is one of the best fortunes for your Company. The Company could achieve the highest ever profit during the year under review."* And *"Your Company has achieved highest ever production and sales turnover in its history."*

35. Likewise, the News in the Press related to GACL such as *"In August 2007, GACL commissioned a Rs.108-cror hydrogen peroxide project at Dahej that has a capacity of 12,540 tonnes per annum (tpa)."* And *"Gujarat Alkalies & Chemicals Limited reported earnings results for the nine-months ended December 31, 2007. The company reported net profit rose*

39% at INR 2,057.3 million compared with INR 1,480 million for the same period last year." Disclose clearly that the company has increased its capacity and profit on the contrary has suffered material injury.

36. In the light of above mentioned statements, it is obvious that the GACL has considerably positive financial performance during the period of 2005-2007 on the contrary claims in the non-confidential version of the petition.

- Input Costs

37. In the 33rd Annual Report of Gujarat Alkalies & Chemicals Limited it is implied that cost of raw materials in production and transportation are increasing. And in the 34th Annual Report of GACL it is stated that *"The raw material expenses increased by 24.55%...during the previous financial year 2005-2006, mainly due to increase in the procurement cost of various raw materials like... and additional transportation cost. Electricity charges have increased by 32.87%... during the previous financial year 2005-2006. Other operating expenses which include manufacturing and operating costs, employee, remuneration and benefits, administrative, miscellaneous and marketing expenses increased in the F.Y. 2006-07 by 19.86%..."*
38. Turkish Government is of the view that, no injury to the Indian domestic industry caused by increasing costs in the domestic market could be attributed to Turkish originating imports.

b) Hindustan Organic Chemicals Limited

- Financial Instability of the Company

39. In the 45th Annual Report of Hindustan Organic Chemicals Limited it is noticed that the company had been incurring losses from the financial year 1997-98 to 2005-06. However, to find out lasting revival strategy the company had appointed SBI Capital Markets Ltd. for techno-economic feasibility study. According to the Annual Report, Government of India is requested to provide equity to be utilized for repayment of loans and to provide funds to be utilized for repayment of high cost overdue bonds and also requested to the continuation of Government of India Guarantee of Rs.100 coror for full term of ten years to be utilized to liquidate high cost debt. This situation clearly shows the instability of the company.
40. Meanwhile, in the Ministry of Chemicals and Fertilizers, Department of Chemicals and Petrochemicals 2005 Report it is stated that the loss the company had faced is because of old technology, high cost of manpower in comparison to industry norm, uneconomic operations and marketing problems.
41. Turkish Government is of the view that, no injury to the Indian domestic industry caused by financial problems of the petitioners could be attributed to Turkish originating imports.

- Input costs

42. In the 45th Annual Report of Hindustan Organic Chemicals Limited it is implied that the capacity of Indian industry is small as compared to the competitors abroad; in effect the Indian industry is in a disadvantageous position with regard to overhead costs, the manpower cost per ton of

finished product is high and old depreciated plants requires high maintenance cost.

43. Furthermore, according to the same report injury suffered by the company is a result of increasing costs related to surging crude oil prices, high labour cost, closed plants due to flood and major repairs of furnace.
44. Turkish Government is of the view that, no injury to the Indian domestic industry caused by increasing costs in the domestic industry could be attributed to Turkish originating imports.

ii. Tariff Reductions

45. Republic of India has reduced the customs duties on the subject product by 30% in 2002-03 to 12.5% in 2006-07, in this framework domestic producers' products have to face competition from imports.
46. In the 33rd Annual Report of the Gujarat Alkalies & Chemicals Limited it is stated that *"Alkali products have to face competition from imports with reduction in custom duties. To protect from unfair competition for products like..., company had approached designated authority for levy of anti-dumping duties against such imports and anti-dumping duties have been imposed on imports of these products from various countries."* This approach stated in this report is not appropriate under the provisions of Article 3.5 of the Anti-dumping Agreement regulates that investigating authorities shall examine all "known factors", other than dumped imports", which "at the same time" causing injury to the domestic industry and factors which may be relevant in this respect include... "competition between the foreign and domestic producers". In addition to this, the WTO Appellate Body concluded in US-Hot-Rolled Steel case that investigating authorities must ensure that injury caused by known factors, other than dumped imports, are not "attributed" to the dumped imports.
47. Under these circumstances, a possible material injury that was caused by domestic industry's inability to compete under lower tariff rates could not be attributed to Turkish originating imports.

Conclusion

48. Contrary to the Article 3.5 of the Anti-dumping Agreement, the non-confidential version of the petition tries to attribute injury caused by other factors (such as increasing costs, financial problems of the petitioners, competition after tariff reductions) to the Turkish originating imports.

49. Under these circumstances, the Government of Turkey is not convinced that the complaint contains sufficient evidence to initiate an anti-dumping investigation against Turkish originating imports within the framework of the provisions of Article 5.3 of the GATT 1994 Anti-dumping Agreement.

50. And Turkey is in the view that on the contrary the steps taken towards a liberalized market economy within the terms of reducing the custom duties by Indian Government, the petitioners aim to retain the oligopolistic structure of the Indian hydrogen peroxide market with eliminating competition.

51. Within the framework of Article 12.2 of the Anti-dumping Agreement, the Government of Turkey requests the Ministry to inform the Turkish Government about

the final findings, whether affirmative or negative, of the anti-dumping investigation regarding the imports of hydrogen peroxide originating, *inter alia*, in Turkey.

52. Bearing in mind the great value attributed by both Turkey and India to the friendly and constructive relations between our countries, the Government of Turkey kindly requests the Republic of India to terminate this proceeding immediately without imposition of any measure on Turkish originating imports.

G.3 Examination by the Authority

53. Concerning issue of Israel and Thailand causing injury to the domestic industry, the Authority notes that the applicant had filed the application for initiation of investigation against Israel and Thailand in addition to the other countries, however, the Authority did not find adequate evidence against Israel and Thailand, therefore, the investigation was initiated only against subject countries. The Authority has examined the arguments concerning injury and noted that the injury analysis of the producers have been done on the basis of actual verified data. The Turkish Embassy has quoted the Annual Report of GACL and HOCL, in this regard, the Authority notes that the statements in the Annual Reports are with reference to companies as a whole, these companies are multi-product and multi-location companies, the performance of these companies as a whole is not relevant for injury analysis of the like article and the same has been examined on the basis of actual records pertaining to like article.

54. It has also been stated that GACL has increased the capacity by installed a project at Dahej with a capacity of 12540 tonnes per annum (tpa) with an investment of 108 crores. The enhancement of capacity has been considered in the relevant section of the following injury analysis.

55. It has further been stated that as per 45th Annual Report of HOCL the company has been incurring losses for the financial years 1997-98 to 2005-06 and to find out lasting revival strategy, the company had appointed SBI Capital Market Ltd. for Techno-economic feasibility study. It has been further stated that the company is financially unstable. It has also been stated that 2005 report of M/o Chemicals & Fertilizers has stated that the loss the company had faced is because of old technology, high cost of manpower in comparison to industry norms, uneconomic operation and marketing problems. The Authority in this regard notes that the HOCL has been declared as a sick company and the Authority has taken due note of the fact and also analysed the injury to the domestic industry by excluding the HOCL in section G.6 of this findings. It has also been noted that the production of the like product by HOCL account for approx. 12% in the base year to less than 9% in the POI of the total production of the domestic industry. Therefore, the trend of the injury of the domestic industry has not been impacted significantly in view of the very small weight of the company in the domestic industry. It has further been noted the trend in the case of the sales volume, cost of sales, and profitability remained same even if the data of HOCL is excluded from the domestic industry. Though the analysis of injury to the domestic industry has also been done by excluding HOCL from the domestic industry, the Authority, however, notes that there is no legal basis to exclude HOCL. The limited purpose of exclusion is to segregate the effect of factors other than dumping causing injury to the domestic industry.

G.4 Cumulative assessment of injury

56. As per para iii of annexure-II, in cases where imports of a product from more than one country are being simultaneously subjected to Anti-dumping investigation, the Authority is required to cumulatively assess effect of such imports, only when it determines that (a) the margin of dumping established in relation to imports from each country is more than 2% expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is 3% of the imports of like article and (b) cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic article.

57. With a view to assess the conditions of competition between imported products and the conditions of competition between the imported products and the like domestic product, the Authority notes that -

- i) The Authority has found that the margin of dumping in respect of each of the subject country is more than 2% and the volume of imports from each country is also more than 3%.
- ii) The subject goods have been imported from the subject countries under the same tariff classification;
- iii) The Authority has found that the imported subject goods are commercial substitutes of the domestically produced Hydrogen Peroxide.
- iv) The authority has further noted that the volume of the imports from all subject countries has been rising from base year to POI except in case of Indonesia. It has also been noted that from Turkey the volume of imports rose sharply in 2005-06 and POI when its prices declined as compared to preceding year i.e. 2004-05. From China PR, the volume of imports rose sharply in POI as prices were lower than all other subject countries. From EU, the volume in POI increased as its prices declined as compared to immediate preceding year. In case of Korea, the volume rose in 2004-05 as its prices declined as compared to immediate preceding year. However, in POI the volume declined. From Indonesia, with the rise in prices in 2005-06, the volume of imports declined though it increased in POI. The rise and decline in quantity of imports from subject countries fluctuated with the change in their prices and prices of the other subject countries indicating the competition between the subject countries.

58. In view of the above, the Authority holds that it is appropriate to cumulatively assess the effect of imports of the subject goods on the domestically produced like article in the light of conditions of competition between the imported products and the like domestic product.

59. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such

imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

60. For the purpose of injury analysis the Authority has examined cumulative effect of dumped imports of the subject goods on the domestic industry and its effect on production, capacity utilization, sales, prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any.

61. Since positive dumping margins have been established for the exports from the subject countries, therefore, entire exports from the subject countries have been treated as dumped imports for the purpose of injury analysis and causal links examination.

(A) **VOLUME EFFECT:** Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

62. For the purpose of injury analysis, the data procured from DGCI&S has been relied upon. It has been noticed that import transactions were in small volumes indicating that imports were mainly made in the packed form. It has also been noticed that imports were mainly made with a strength of 50% concentration. Other imports made at the different concentration have been converted to 50% concentration for calculation purpose. The data indicates that the imports from subject countries increased in absolute terms from 6006 MT in 2003-04 to 29606 MT during POI. The share of subject countries in imports remained at the same level during the same period. The share was 96.90% in 2003-04 and in POI it was 96.29%. The share of individual subject country, however, changed considerably.

63. The imports in relation to production increased from 6.11% 2003-04 to 32.61% in POI. During the same period, imports in relation to consumption increased from 6.33% to 23.97%.

i) **Import Volumes and share of subject country**

	Units	2003-04	2004-05	2005-06	Jan 06-Dec 06
Imports Volume					
China	MT	546	5,357	4,696	11,422
Indonesia	MT	3,019	2,617	1,819	2,093
Korea	MT	1,492	1,182	4,884	2,499
Turkey	MT	0	1,010	6,039	11,682
EU	MT	950	702	186	1,910
Sub Countries	MT	6,006	10,867	17,625	29,606
Other Countries	MT	192	1,643	1,621	1,141
Total Imports	MT	6,198	12,510	19,246	30,747
Trend	Indexed	100	202	310	496
Market Share in Imports					
China	%	8.81	42.82	24.40	37.15
Indonesia	%	48.71	20.92	9.45	6.81
Korea	%	24.07	9.45	25.38	8.13
Turkey	%	0.00	8.07	31.38	37.99
EU	%	15.32	5.61	0.97	6.21
Sub Countries	%	96.90	86.87	91.58	96.29

Other Countries	%	3.10	13.13	8.42	3.71
Total Imports		100	100	100	100
CIF Import Prices					
China	Rs./MT	12,003	16,727	14,579	15,037
Indonesia	Rs./MT	9,490	12,989	15,387	16,181
Korea	Rs./MT	13,473	17,153	16,152	16,462
Turkey	Rs./MT	0	18,172	16,212	16,370
EU	Rs./MT	13,341	19,690	19,418	16,601
Sub Countries	Rs./MT	11,316	16,199	15,709	15,865
Other Countries	Rs./MT	12,920	17,901	16,227	17,079
Total Imports	Rs./MT	11,367	16,424	15,754	15,911

	Units	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec 06
Imports in relation to production	%	6.11	10.94	17.99	32.61
Imports in relation to consumption	%	6.33	10.12	15.27	23.97

ii) Demand, Output and Market shares

a) Growth in Demand

Demand	Units	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec 06
Domestic Industry	MT	88,762	94,925	96,138	92,775
Imports-Subject countries	MT	6,006	10,867	17,625	29,606
Imports-other countries	MT	192	1,643	1,621	1,141
Total Imports	MT	6,198	12,510	19,246	30,747
Total Demand	MT	94,960	1,07,435	1,15,384	1,23,522
Trend	Indexed	100	113	122	130

64. Demand of subject goods has been determined by addition of domestic sales of domestic industry and all imports from all countries. From the data, trend indicates that demand for the subject goods had been growing from base year to POI. It grew by 30% during POI as compared to base year i.e. 2003-04.

b) Capacity, Capacity Utilization and Production of the Domestic Industry

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec 06
Capacity	MT	91,450	91,450	91,530	86,030
Trend	Indexed	100	100	100	94
Capacity Utilisation	%	107	108	107	105
Trend	Indexed	100	101	100	98
Production	MT	98,276	99,319	97,953	90,781
Trend	Indexed	100	101	100	92

65. The capacity of the domestic industry has been calculated for the strength of 50% concentration of the like article. The data indicate that capacity of the domestic industry has not undergone any change from base year till 2005-06. It remained at stated capacity of 91,450. M/s National Peroxide Ltd. (NPL) enhanced the capacity by 14000 MT. The enhanced capacity was, however, commissioned in November

2006. During the POI, the available capacity was 86,030 MT as NPL had shut down the plant during the POI for expansion purpose. M/s Gujarat Alkalies & Chemicals Ltd. (GACL) has added capacity of 25,080 MT by setting up a plant at Dahej, however, the plant had been commissioned after the POI.

66. The production of the domestic industry was 98,276 MT in 2003-04, it increased to 99,319 MT in 2004-05 before declining to 97,953 MT in 2005-06 and 90,781 MT during the POI. The decline of production during the POI is attributable to non-availability of the capacity of one of the producers because of shut down of plant for expansion purpose.

67. The stated capacity of the domestic industry remained fully utilized from base year to POI. The capacity utilization was 107% in 2003-04, increased to 109% in 2004-05 before declining to 107% in 2005-06 and 106% during POI.

68. The data indicate that there was a gap in available capacity of the domestic industry and demand of the product under consideration (PUC). The domestic industry continued to fully utilize the available capacity from base year to POI. The imports were bound to come to fill the gap in the demand and supply of the PUC in the country.

c) Sales of Domestic Industry

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec 06
Domestic Sales(bulk)	MT	51,867	61,000	59,273	58,513
Trend	Indexed	100	118	114	113
Domestic Sales (packed)	MT	35,683	32,681	35,608	33,095
Trend	Indexed	100	92	100	93
Domestic Sales (Total)	MT	88,762	94,925	96,138	92,775
Trend	Indexed	100	107	108	105

69. The data on sales indicates that the domestic sales of the domestic industry increased by 7% in 2004-05, 8% in 2005-06 and 5% in POI as compared to base year. The sale declined in the POI as compared to immediate preceding year. The data also indicate the sale in loose form of the subject goods increased by 13% in POI as compared to base year, however, in case of packed material, the sale declined to 93% in POI as compared to base year.

d) Demand and Market Share

Demand	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec 06
Sales of Domestic Industry	MT	88,762	94,925	96,138	92,775
Total Imports	MT	6,198	12,510	19,246	30,747
Total Demand	MT	94,960	1,07,435	1,15,384	1,23,522
Trend	Indexed	100	113	122	130
Market Share in Demand					
Domestic Industry	%	93.47	88.36	83.32	75.11
China	%	0.57	4.99	4.07	9.25
Indonesia	%	3.18	2.44	1.58	1.69
Korea	%	1.55	1.10	4.23	2.02
Turkey	%	-	0.94	5.23	9.46
EU	%	1.00	0.65	0.16	1.55

Subject Countries	%	6.33	10.12	15.27	23.97
Imports from Other countries	%	0.20	1.53	1.40	0.92

70. The data indicate that demand of the subject goods has been growing consistently from base year to POI. It grew by 30% in POI as compared to base year. The market share of the subject countries increased from 6.33% in 2003-04 to 23.97% in POI. During the same period, the share of the domestic industry, however, declined from 93.47% to 75.11%. The share of other countries did not change significantly. It was 0.2% in 2003-04 and increased to 0.9% in POI. The Authority notes that the market share of imports was bound to increase in view of the rising demand and constraints of supply of the like article in the country.

(B) Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

71. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject countries have been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry for the packed product have been compared with the landed cost of imports from the subject countries as the imports are largely made in packed form.

(i) Evaluation of prices over period under consideration

Export Price	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec 06
China	Rs/MT	12,003	16,727	14,579	15,037
Indonesia	Rs/MT	9,490	12,989	15,387	16,181
Korea	Rs/MT	13,473	17,153	16,152	16,462
Turkey	Rs/MT	0	18,172	16,212	16,370
EU	Rs/MT	13,341	19,690	19,418	16,601
Subject Countries	Rs/MT	11,316	16,199	15,709	15,865

72. The data on prices reveals that weighted average export prices from the subject countries increased in 2004-05 and declined in 2005-06, however, it rose again in POI.

(ii) Price undercutting and underselling effects

Country	China	Indonesia	Korea	Turkey	EU
NSR – DI	***	***	***	***	***
CIF import price	15,037	16,181	16,462	16,370	16,601
Landed price of imports	16,999	18,292	18,610	18,506	18,767
Price undercutting					
Amount	***	***	***	***	***
%	***	***	***	***	***
NIP – DI	***	***	***	***	***
Price underselling					
Amount	***	***	***	***	***
%	***	***	***	***	***

73. In determining the weighted net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

74. Price undercutting has been determined by comparing the weighted average landed value of dumped imports from each of the subject countries for the period of investigation with the weighted average net sales realization of the packed material of the domestic industry for the same period. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the DGCI&S data of import prices from the subject countries. The price undercutting from subject countries was in the range of 8-17% during POI.

75. For the purpose of price underselling determination the weighted average landed prices of imports from subject countries have been compared with the Non-injurious price of the domestic industry determined for the POI. It shows that underselling was in the range of 18-26%.

(iii) Price suppression and depression effects of the dumped imports:

76. The price suppression effect of the dumped imports has also been examined with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values from the subject countries.

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec06
Sales(NSR)-Loose	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	114	120	118
Sales(NSR)-Packed	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	123	109	115
Sales(NSR)-Average	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	115	115	115
Cost of Sales-Loose	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	100	112	118
Cost of Sales-Packed	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	106	115	121
Cost of Sales-Average	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	102	112	119
Profit/loss - Loose	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	285	224	119
Profit/loss - Packed	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	346	35	29
Profit/loss - Average	Rs./MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	306	153	86

77. The data indicates that the average selling price (loose and packed) increased by 16% in POI as compared to base year. In rupee terms, the price increased by Rs. 2709 in POI as compared to base year. The price increased by Rs.133 in POI as compared to immediate preceding year. The data on cost of sales indicate that average cost of sales (loose & packed) increased by 19% in POI as compared to

base year. In rupee terms, it increased by Rs.2,881/- in POI as compared to base year. The cost increased by Rs.957/- in POI as compared to immediate preceding year. The average profitability (loose & packed) declined to 86% in POI as compared to 100 of base year. In rupee terms, it declined by Rs.172/- in POI as compared to base year. It declined sharply in POI by Rs.825/- as compared to immediate preceding year.

78. The selling price of the material in loose form increased by 18% in POI as compared to base year. In rupee terms, it increased by Rs.2,880/- in POI as compared to base year. The price declined by Rs.325/- in POI as compared to immediate preceding year. The cost of sales in loose form increased by 18% in POI as compared to base year. In rupee terms, it increased by Rs.2,653/- in POI as compared to base year. It increased by Rs.963/- in POI as compared to immediate preceding year. The profitability of the product in loose form increased by 19% in POI as compared to base year. In rupee terms, it increased by Rs.227/- in POI as compared to base year. However, it declined by Rs.1,288/- in POI as compared to immediate preceding year.

79. The selling price of the material in packed form increased by 15% in POI as compared to base year. In rupee terms, it increased by Rs.2,648/- in POI as compared to base year. The price increased by Rs.973/- in POI as compared to immediate preceding year. The cost of sales in packed form increased by 21% in POI as compared to base year. In rupee terms, it increased by Rs.3,536/- in POI as compared to base year. It increased by Rs.1,050/- in POI as compared to immediate preceding year. The profitability of the product in packed form shows declining trend. It declined to 29% in POI as compared to 100 of base year. In rupee terms, it declined by Rs.8,88/- in POI as compared to base year. As compared to immediate preceding year, it declined by Rs.78/-.

80. The above data indicate that the selling price could not keep pace with the increase in cost of sales resulting in decline in profitability. In the case of the product in packed form, the trend was pronounced and profitability declined sharply. This indicates that the prices of the like article did not increase with the increase in cost of sales indicating suppression in prices.

G.4 Examination of other Injury Parameters

81. After having examined the effect of dumped imports on the volumes and prices of the domestic industry and major injury indicators like volume and value of imports, capacity, output, capacity utilization and sales of the domestic industry as well as demand pattern with market shares of various segments in the earlier section, other economic parameters which could indicate existence of injury to the domestic industry have been analyzed hereunder as follows:

i) Profits and actual and potential effects on cash flow

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec 06
PBIT – Domestic Sales	Rs./lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	213	120	84
PBT – Domestic Sales	Rs./lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	327	165	90
Depreciation on domestic	Rs./lacs	***	***	***	***

sales						
Trend		Indexed	100	104	109	111
Changes in working capital		Rs./lacs	***	***	***	***
Trend		Indexed	-100	66	32	34
Cash flow		Rs./lacs	***	***	***	***
Trend		Indexed	100	118	88	69

82. The data indicates that profits before interest and taxes (PBIT) in indexed form declined to 84 in POI as compared to base of 100 in base year. Two of the producers are multi-product, multi-location companies, therefore, the cash flow position is not available from the books of account for the like product, therefore, the cash flow has been determined by addition of Profit before tax (PBT), depreciation and change in the working capital. The data indicates that the cash flow increased in 2004-05 and thereafter declined in 2005-06 and POI.

ii) Return on investment and ability to raise capital

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec 06
Net Capital Employed (NFA basis)	Rs./lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	108	111	120
PBIT on domestic sales	Rs./Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	213	120	84
Return on Investment	%	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	191	111	67

	Unit	2004-05	2005-06	Jan 06-Dec 06
Increase in investments	Rs. Lacs	***	***	***
Trend	Indexed	100	33.4	172.3

83. The data shows that the return on capital employed (on net fixed asset basis) with base as 100 (indexed) in 2003-04 increased to 191% in 2004-05 and then declined to 111% in 2005-06 and 67% during POI.

84. Two producers of the domestic industry have increased the capacity. One of the producers (NPL) increased the capacity by 14,000 MT with the investment of Rs.*** crores. The enhanced capacity was commissioned in November 2006. Second producer (GACL) has set up a new plant at Dahej by adding capacity of 25,080 MT with an investment of Rs.*** crores which has been commissioned after the POI. The domestic industry has explained that *"it is true that dumping has not affected abilities of these companies to make capital investments, it is also evident that any capital investment is based on expectations of fair market prices for the product. Further, consistent dumping of the product is bound to impact the capital investment in the long run."*

iii) Productivity

85. The data on production per employee shows that the productivity increased in 2004-05, however, it declined in 2005-06 and POI.

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec 06
Production	MT	***	***	***	***
Production per day	MT	***	***	***	***
No. of employees	Nos.	***	***	***	***
Productivity per employee	MT	***	***	***	***

iv) Employment and Wages

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	Jan-Dec 06
Employees	Nos.	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	100	99	99
Salary and wages per employee	Rs/Lacs	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	105	118	117

86. There was no significant change in the number of employees from base year to POI, however, the wages increased by 17% in POI as compared to base year.

v) Inventories

	Unit	2003-04	2004-05	2005-06	Jan 06-Dec 06
Average Inventory	MT	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	167	250	179

87. The data indicates the average inventory increased by 79% in POI as compared to base year, however, as compared to preceding year, the average inventory declined. The average inventory in terms of number of days' sales continued to increase till 2005-06 before declining in POI. It was equivalent to 4 days in 2003-04 and increased to 11 days in 2005-06 before declining to 8 days in POI.

vi) Growth

88. The growth in demand shows positive trend from base year to POI on year to year basis. The growth in production was positive in 2004-05, however, it was negative in 2005-06 and the POI. The sale volume was positive in 2004-05 and 2005-06, however, it was negative in POI. The market share of the domestic industry shows negative trend in 2004-05, 2005-06 and POI. The profitability, profit(PBIT), cash flow and return on capital employed were positive in 2004-05 and were negative in 2005-06 and POI.

viii) Magnitude of Dumping

89. Magnitude of dumping as an indicator of the extent to which the dumped imports can cause injury to the domestic industry shows that the dumping margins determined against the subject countries named, for the POI, are significant.

ix) Factors Affecting Prices

90. It has been observed that prices of Naptha, raw material required for production of the like article had increased from Rs.17,000/MT in base year to Rs.28,000/MT in the POI impacting the cost of production of the like article. It has also been observed that the weighted average landed value of the imported article increased substantially in 2004-05, however, started declining in 2005-06 and POI. It has also been observed that the weighted average landed value was undercutting the net selling price of the domestic industry over the injury period.

91. Change in cost structure if any, competition in the domestic industry and prices of competing substitutes have been examined for analyzing the factors that might be affecting the prices in the domestic market. Since the imports have largely been made in the packed form, weighted average cost of production and selling price of the domestic industry for packed product has been considered for comparing with the landed price of imports. The weighted average cost of production for packed material has increased by 18% during POI. The weighted average net selling prices increased only by 14% during the same period. The domestic industry submit that landed values of imported material from subject countries are significantly below the selling price of the domestic industry, causing price undercutting in the Indian market. The undercutting during POI was in the range of 8-17% and underselling was in the range of 18-26% during POI.

G.5 Conclusion on injury parameters

92. The examination of above injury parameters indicates that the product under consideration (PUC) shows consistent growth from base year (2003-04) to POI (Jan-Dec'06). The capacity of the domestic industry though has been enhanced but during the POI and preceding years, the capacity was not adequate to meet the supply of the PUC to meet the demand in the country. The capacity, therefore, remain fully utilized from base year to POI. The sales volume increased by 13% during the same period and in terms of sale days, the average inventory declined. The sale of like article in packed form shows declining trend in POI as compared to base year indicating adverse market conditions.

93. The selling price of the like article increased by Rs.2709/MT as compared to cost of sales of Rs.2881/MT from base year to POI. As compared to immediate preceding year, the selling price increased by Rs.133/PM as compared to increase in cost of sales of Rs.957/MT. The profitability of like article declined by Rs.172/MT in POI as compared to base year. As compared to immediate preceding year, the profitability declined by Rs.825/MT in POI. The decline in profitability reflected in decline in profits which declined to 84 (indexed) in POI as compared to 100 of base year. Similarly, the return on capital employed declined to 67 (indexed) in POI as compared to 100 of base year.

94. In volume term the domestic industry has not suffered any volume injury as the capacity of the domestic industry remained fully utilized during the entire injury period. However, in financial terms, the decline in profitability, profits and return on capital employed indicate injury to the domestic industry.

G.6 Other Known factors

95. The other factors which might have contributed to injury to the domestic industry have been analysed. In this regard the following indicative factors as laid down in the Rules have been analysed.

i) Volume and prices of imports from other sources

96. The volume of imports from other countries is only 4%, therefore, it cannot be cause of injury to the domestic industry.

ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

97. The subject goods have shown significant growth during the injury period. The total demand of subject goods has increased by 30% during Period of Investigation as compared to the base year. There is also no significant change in consumption pattern of the product in the domestic market, which could be attributed to the injury to the domestic industry.

iii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

98. There is no restricted practice prevalent in the industry, which could have attributed to the injury to the domestic industry.

iv) Development of technology

99. The technology for production of the product has not undergone any change. Development of any other technology, therefore, cannot be attributed to the injury to the domestic industry.

v) Export performance

100. The export volume of the domestic industry is insignificant during the entire injury period. Therefore, this factor is not attributable to the injury to the domestic industry.

vi) Productivity of the Domestic Industry

101. Productivity of the domestic industry in terms of production per employee has shown some decline during POI as compared to base year because of the decline in production during the same period.

vii) Hindustan Organic Chemicals Ltd. (HOCL)

102. The Authority has noted that HOCL has been declined as a sick company. In this regard, the Authority has examined the major parameters of injury to the domestic industry by excluding the data of HOCL to ascertain whether sickness of the company has contributed to injury to the domestic industry. The Authority notes that production of the like article rose in 2004-05, 2005-06 and declined in POI. The capacity utilization of the domestic industry remained above the stated capacity of the producer implying that capacity remained fully utilized during the injury period. Domestic sale (loose) of the like article rose by 26% in 2004-05, 27% in 2005-06 and 23% in POI as compared to the base year. Domestic sale (packed) of the like article

was 93% in 2004-05, 102% in 2005-06 and 96% in POI as compared to the base year. The total domestic sale of the like article increased by 11% in kPOI as compared to the base year. For like article in loose form, the selling price increased by Rs.2849 PMT, cost of sale increased by Rs.2607 PMT and profitability increased by Rs.242 PMT in POI as compared to base year. As compared to immediate preceding year, the selling price declined by Rs.404 PMT, cost of sale increased by Rs.1197 PMT and profitability declined by Rs.1602 PMT. For like article in packed form, the selling price increased by Rs.2650 PMT, cost of sales by Rs.3682 PMT and profitability declined by Rs.1032 PMT in POI as compared to base year. As compared to immediate preceding year, selling price increased by Rs.968 PMT, cost of sale increased by Rs.1192 PMT and decline in profitability by Rs.221 PMT. For like article (loose & packed), selling price increased by Rs.2660/-, cost of sale by Rs.2873 PMT and profitability declined by Rs. 213 PMT in POI as compared to base year. As compared to immediate preceding year, the selling price increased by Rs.119 PMT, cost of sale by Rs.1164 PMT, and profitability declined by Rs.1045 PMT.

103. These major parameters indicate that even if the data of HOCL is excluded from the domestic industry, even then the trend of injury parameters remain same.

No other factor has come to the notice of the Authority which might have caused injury to the domestic industry.

H. Causal Link

104. The foregoing analysis indicates that the volume of dumped imports from the subject countries have increased substantially both in absolute terms as well as in relation to the share in demand.

105. The demand of the PUC shows consistent growth. The domestic industry as per available information was not in position to meet the rising demand as their capacity remained fully utilized. The change in pattern of sale, however, indicate the difficulty in selling the packed material in the market. The sale of packed material declined to 33095 MT in POI as compared to 35683 MT in base year. To fill the gap in demand and supply, imports were being made in the country, however, the landed value shows the undercutting of selling price of the domestic industry by the imports. The imports were being made mainly in packed form, the impact of these imports was visible in trends in sale volume, selling price and profitability of the packed form of the like article. The selling price of the packed material increased by Rs.2648 PMT as compared to increase in cost of sale of Rs.3,536 PMT from base year to POI. The selling price increased by Rs.973 PMT as compared to increase in cost of sale of Rs.1050 PMT in POI as compared to immediate preceding year. The profitability declined to 29 (indexed) in POI as compared to 100 of the base year. In rupee terms, the profitability declined by Rs.888 PMT during the same period. As compared to immediate preceding year, the profitability declined by Rs.78 PMT. The average selling price (packed and loose material) also indicate that the selling price did not increase in consonance with the increase in cost of sale indicating suppression of the price. The profitability, therefore, declined by Rs.172 PMT in POI as compared to base year. The profitability, however, declined sharply by Rs.825 PMT as compared to immediate preceding year.

106. Despite strong growth in demand and utilization of capacity of the domestic industry, no reason has come to the notice of the Authority by which the domestic industry should not be in position to raise the prices in consonance with the rise in cost of sales of the like article. The imports, however, have been undercutting the selling price of the domestic industry which suppress the prices of the like article resulting in decline in profitability, profits and return on capital employed. This establishes causal link between dumping of the subject goods and injury to the domestic industry.

I. Conclusions

107. It has been concluded from the foregoing that:

- A. The subject goods have been exported to India from the subject countries below its normal value;
- B. The domestic industry has suffered material injury;
- C. The injury has been caused by the dumped imports from subject countries.

J. Indian industry's interest & other issues

108. The Authority notes that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject country in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

Injury margin

109. The non-injurious price for the packed product has been compared with the landed value of the exports for determination of injury margin. The injury margins from the subject countries have been worked out as follows:

Name of the Country	Injury Margin (Rs./MT)
China PR	***
Indonesia	***
Korea ROK	***
Turkey	***
EU	***

K. Recommendations

110. In view of the above, the Authority considers it necessary and recommends definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject countries in the form and manner described hereunder.

111. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry, accordingly, definitive antidumping duty equal to difference in the amount indicated in Col 8 of the table below and landed value is recommended to be imposed from the

date of notification to be issued in this regard by the Central Government, on all imports of subject goods originating in or exported from the subject countries.

Duty Table

Sl. No	Tariff Item	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	28470000	Hydrogen Peroxide	China PR	China PR	Any	Any	22,100	MT	USD
2.	Do	Do	China PR	Any country other than China PR	Any	Any	22,100	MT	USD
3.	Do	Do	Any country other than subject countries	China PR	Any	Any	22,100	MT	USD
4.	Do	Do	Indonesia	Indonesia	Any	Any	22,337	MT	USD
5.	Do	Do	Indonesia	Any country other than Indonesia	Any	Any	22,337	MT	USD
6.	Do	Do	Any country other than subject countries	Indonesia	Any	Any	22,337	MT	USD
7.	Do	Do	Korea ROK	Korea ROK	Any	Any	23,082	MT	USD
8.	Do	Do	Korea ROK	Any country other than Korea ROK	Any	Any	23,082	MT	USD
9.	Do	Do	Any country other than subject countries	Korea ROK	Any	Any	23,082	MT	USD
10.	Do	Do	Turkey	Turkey	Any	Any	23,173	MT	USD
11.	Do	Do	Turkey	Any country other than Turkey	Any	Any	23,173	MT	USD
12.	Do	Do	Any country other than subject countries	Turkey	Any	Any	23,173	MT	USD
13.	Do	Do	European Union	European Union	Any	Any	23,173	MT	USD
14.	Do	Do	European Union	Any country other than EU	Any	Any	23,173	MT	USD
15.	Do	Do	Any country other than subject countries	European Union	Any	Any	23,173	MT	USD

112. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Section 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

113. An appeal against the findings after its acceptance by the Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and Customs Tariff Rules, 1995.

R. GOPALAN, Designated Authority